नारायण भजनावाली

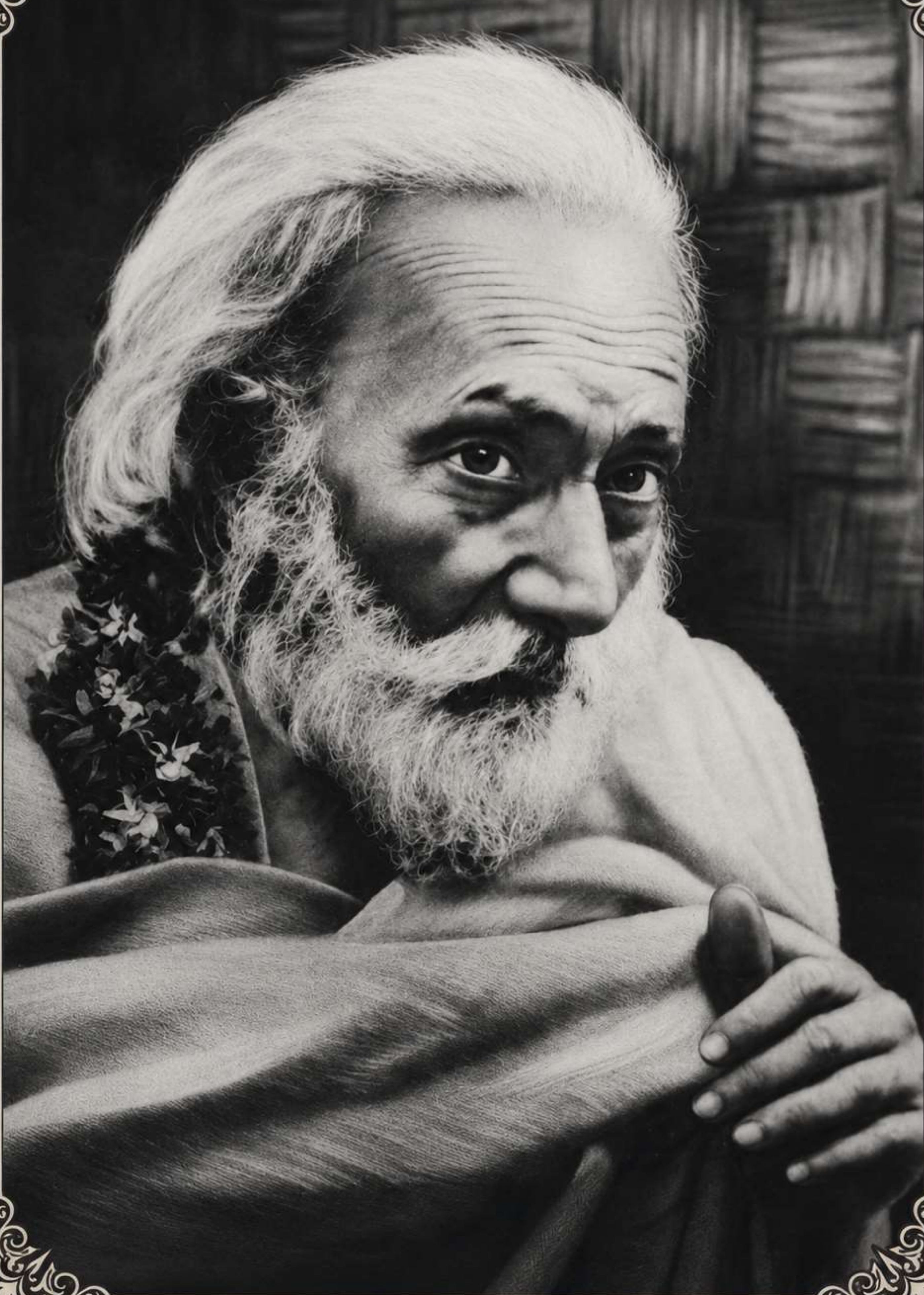

ॐ नारायण

नारायण भजनावाली

लेखक

नारायण दास परमहंस

संस्करण *मूल्य*: *प्रेम*
तृतये संस्करण: 2026

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशक: अभिराम गौर सुन्दर दास,
(अभिषेक माथुर)
जयपुर
दूरभाष : 9828899001

प्रथम प्रकाशन- सन् १९५४ (1954) के लिए आभार:
श्री केशव स्वरूप बी. एस.सी. व श्री विनोद बिहारी माथुर
मिलने का पता:
श्री कृष्ण कुमार राजाजी
ब्रह्मन पुरि, अलीगढ
श्री नारायण स्वरूप बी. एस. सी.
गोपाल नगर, पोस्ट फिरोजाबाद [जिला आगरा]

— ✱ —

परम पूज्य परमहंस श्री श्री 108 नारायण स्वामी महाराज

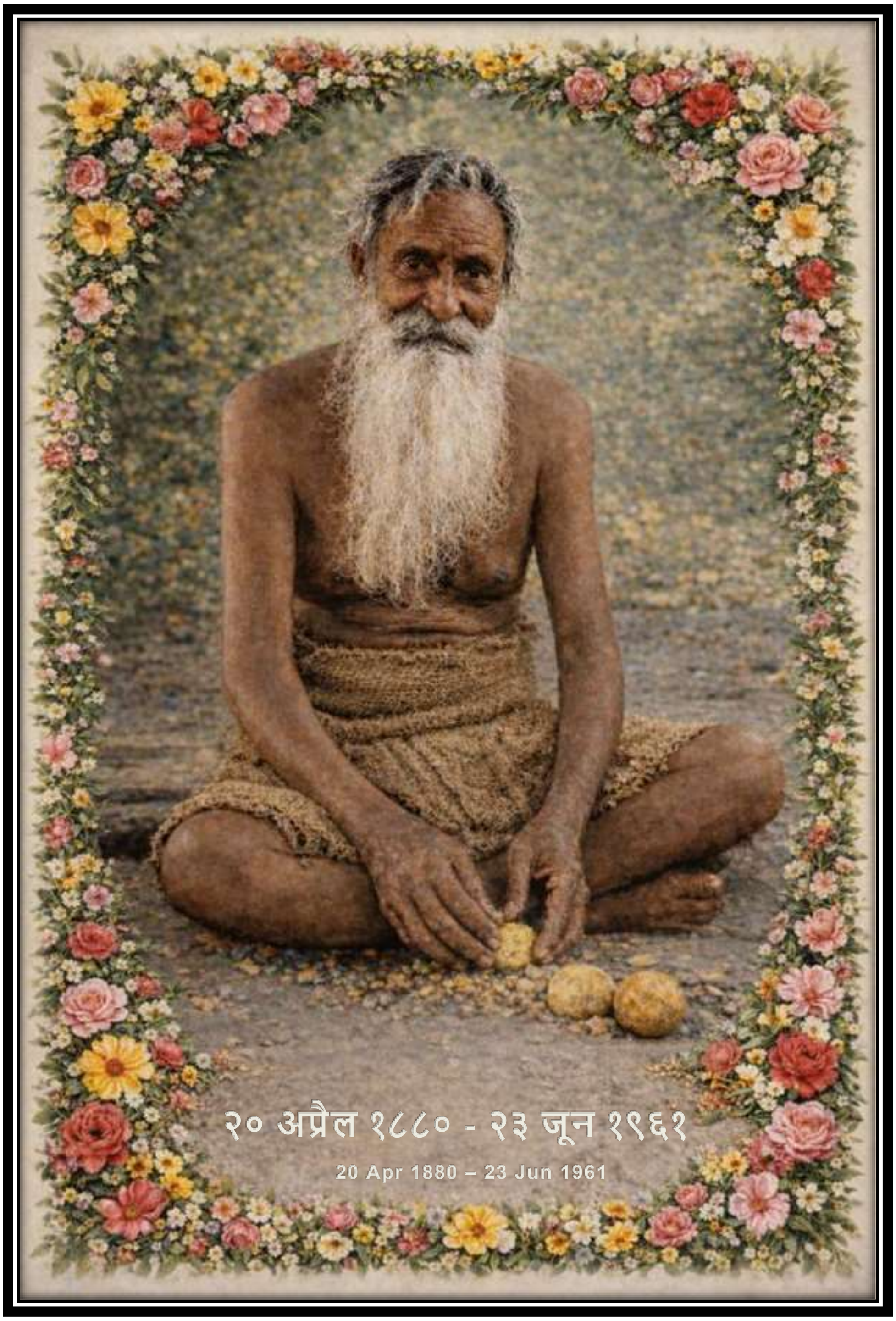

दो बातों का भेद मत जानो – जो चाहे कल्याण।

नारायण एक ही सत्य हैं, और दूसरे सब मिथ्या हैं; केवल श्री भगवान ही सत्य हैं।

– ✻ –

❈ विषय-अनुक्रमिनका ❈

१ हे दयामय हम सबों को
२ जय जगदीश ईश
३ दीनबंधु दीनानाथ
४ गुरु बिन कौन करे भव पार
५ नारायण जिन नाम लिया
६ गिरधर तुम बिन
७ अब तो प्रभु जी बनावें ०
८ नैनन ही में राखूंगी
९ बाहि घर जावोरि नींद
१० प्रभु तेरे दर की मै झाडू
११. जाऊँ कहाँ तज चरण तुम्हारे
१२. कब तक हमें दिखाएंगे
१३. जो मोहि राम लागते
१४. नहीं ऐसो जनम बारम्बर
१५. मन तू हरि को क्यों नहीं
१६. गुन गाऊँ अपने प्रभु के
१७. मौन बिना सुख नाहीं
१८. भजन करे तो हृदय से हो
१९. मन कौन गति तेरी अब
२०. नारायण तेरी कृपाही
२१. नारायण जिनके हृदय
२२. नारायण मेरे जनम जनम
२३. दिन दिन प्रीति अधिक मोहि
२४. लगन लगी चतुर्भुज श्याम
२५. करुणानिधान स्वामी
२६. हरि भजन बिना सुख नाहीं
२७. प्रभु मिलें कब हमारे
२८. नटवर तुमको मेरी
२९. हरि बिन कैसे चैन पड़े
३०. प्रभु चरन का प्रेम रस
३१. अपने प्यारे को पल भर
३२. नारायण तेरी माया
३३. रसिया बनजारे मन
३४. प्यारे मन हरि रंग से
३५. नारायण तुम्हारी दयालुता
३६. मैं अपने प्यारे की जोगन
३७. हरि के दर्श बिना सब
३८. छिपे रहोगे कहाँ तलक
३९. भजो रे मन हरि गोविन्द
४०. प्रभु के कौन कौन गुण
४१. हरि बिन दर्द न जाने
४२. करो मन हरदम हरि
४३. प्रभु हम गरीबन पे राखो
४४. माया ठगनी क्या नैना
४५. बंगला अजब बना महाराज
४६. कठिन पंथ हरि मिलन
४७. अंखियां हरि दर्शन की
४८. नारायण अब तु काहे को
४९. कहाँ गये प्रभु मेरे सुख
५०. नारायण अब काहे मन
५१ मन लगा हमारा फकीरी में
५२ प्रभु मेरे जीवन दान
५३ जै जै राम कृष्ण हरी ...
५४ आशिक को दुःख भारी

— ✱ —

दूसरा भाग

५५ हरि हस के कंठ लगाएंगे
५६ प्रभु तुम्हारे दर्श का दीवाना
५७ प्रभु तुम्हें बुलाके मैं हैरान
५८ प्रभु जुदाई आपकी अब
५९ तड़पते हैं सिसकते हैं
६० चलते फिरते खाते पीते
६१ रमते हुए हैं साधु सुनले
६२ पी जाऊं घोट घोट के
६३ मैं तो नारायण के गुण गाऊं
६४ पापों का नाश कैसे
६५ जीवन धन मेरे चरण
६६ तेरा नाम हर एक स्वास
६७ मुद्दत से तड़पते हैं हम
६८ गुरुदेव दया करके मुझको
६९ दर्शन जरा दिखा जा वही
७० प्रभु तुम्हारी याद में मन
७१ दिखा दो अपना दर्शन
७२ किसी प्रकार हमें दर्शन
७३ पिला दो भीख दर्शन की
७४ श्री प्रभु दयाल कब हमें
७५ प्यारे विष्णु बैकुंठ बुलालो
७६ गुरु के चरणों की रजका
७७ निश्चय किया है यह ही
७८ हुए बदनाम तुमसे
७९ नारायण हमारी नैया
८० प्रभु तुम्हारी याद में
८१ लागन जो हरि से लगा
८२ प्यारे तुम्हारे प्रेम में
८३ सारा जगत है झूठा
८४ गुरुजी हमारे प्राण हैं
८५ लेना सुख मेरी ओ चक्र
८६ श्री बद्री विशाल प्यारे
८७ प्यारा विश्वास प्रेम का
८८ कैसे मिलूं प्रभु तुमसे
८९ ईश्वर तेरे नाम की बूटी
९० पास जिनके राम धन है
९१ हे प्रभु आनन्द दाता
९२ मैं तो तेरा दास प्रभु
९३ प्रभु दी नौकरी में हम
९४ अविनाशी के दर पे मेरी
९५ अब तो प्रभु निभाये बनेंगी
९६ प्रभु दयालु दया करके
९७ छिपे रहोगे कहाँ तक
९८ दिलजानी सुनो मेरे
९९ नारायण प्रेम बिना नहीं
१०० साहब सबका एक है
१०१ सत बोलना और भजन करें
१०२ कारज तो संसार के सब
१०३ भोजन भजन जब कीजिए
१०४ मन मगन हुआ फिर क्या

— ✻ —

ॐ नारायण

भूमिका

धन्यवाद उस शुद्ध, सत, चित, आनन्द, ब्रह्म स्वरूप, आत्मा, अजर, अमर, अविनाशी, सर्वव्यापी, अन्तर्यामी, घट-घट वासी, श्री बद्रीनाथ जी, नारायण, विष्णु-भगवान, चतुर्भुज जी, चौदह लोक के मालिक, लीला-धारी, श्री गुरुदेव जी, गरुड़ध्वज, प्राणप्यारे, सुखद, दीनबन्धु, निर्गुण, सगुण स्वरूप, परम आत्मा को कोटि-कोटि बार साष्टांग दण्डवत प्रणाम है।

निराकार व साकार में कुछ भेद नहीं है। केवल साधन जुदा-जुदा हैं। निराकार की उपासना गृहस्थ में रहकर करना बहुत कठिन है। संन्यास लेने के बाद, देह भाव छोड़कर धीरे-धीरे हो जाती है। गृहस्थाश्रम में भक्ति के साधन बहुत सरलता से होते हैं और दो-चार जन्म में भगवान की प्राप्ति हो जाती है।

नारायण की भक्ति करने के लिए बहुत से साधन शास्त्रों में बतलाये गये हैं। जो इस दास से जैसा हो सका है, अनुभव करके ("गृहस्थों के जीवन मुक्त होने के साधन") नामक पुस्तक में लिख दिये हैं।

भगवान की भक्ति करने के लिए प्रेम का होना अत्यन्त आवश्यक है। प्रेम बिना भक्ति का आनन्द नहीं आता।

वर्तमान समय कलियुग में सांसारिक मनुष्यों का प्रेम कुटुंबियों में अधिक देखने में आता है। नारायण में प्रेम बढ़ाने के लिए सबसे उत्तम साधन गान विद्या बतलाया गया है। मन गायन करने व सुनने से ठहर जाता है और आनन्द पाता है।

श्री सामवेद में गान विद्या का विस्तार के साथ सब हाल लिखा है। छः राग, तीस रागिनियाँ बतलाई गई हैं। हर राग की पाँच रागिनियाँ प्रधान मानी गई हैं। कुल ३६(36) छत्तीस हैं। सप्त स्वर, तीन ग्राम, ४९ (49) उनन्चास करोड़ तानें बनाई गई हैं। दिन रात के लिए समय के लिए राग व रागिनी भिन्न भिन्न गायन करने की बतलाई गई हैं। हर राग व रागिनों की सरगम भी अलग अलग है। गान विद्या सब विद्याओं से कठिन विद्या है। श्रद्धा की वृद्धि और मन प्रसन्न करने का सबसे उत्तम यह साधन है। जितने भी देव लोक हैं सब में गान विद्या का प्रचार बहुत है। जब देवता गायन करने व सुनने से प्रसन्न होते हैं तो मनुष्य क्यों नहीं प्रसन्न होंगे। यहां तक लिखा है कि श्री सूर्य नारायण जिस समय से निकल कर प्रसन्न होते हैं, बराबर उन के सामने गायन होता ही रहता है। गाने के सुनने से भगवान प्रसन्न होते हैं।

— ✱ —

जीवात्मा की प्रसन्नता का कारण है–मथुरा, वृन्दावन, अयोध्या, नाथ द्वारा, इत्यादि चार धामों में और भारत के प्रत्येक मन्दिरों में नित्य कीर्तन होता है। भगवान सम्बन्धी राग रागिनी मन को खींच कर प्रभु के चरणों में लाती हैं। गाने व सुनने से मन पर बहुत प्रभाव पड़ता है। भजनों, रागों के गाने सुनने से सबका मन प्रसन्न होता है चाहे कोई गाने का शौकीन हो या न हो। जितने भी बड़े बड़े महात्मा भारत में हुए हैं, लगभग सभी ने अपना प्रेम भाव उपदेश के साथ संसारी मनुष्यों को लाभ पहुँचाने के लिए पदों में प्रकट करके बताया है। पदों को गाने से वैराग्य प्रेम, भक्ति, नारायण की हृदय में उदय होती है। कलियुग के वर्तमान समय में केवल कीर्तन बतलाया है। सोने में सुहागा हैं।

इस दास को भी गृहस्थ आश्रम से ही गाने और पद बनाने का शौक रहा है। ग्वालियर में गान विद्या सीखी थी। वेदान्त का सार निकाल कर ग़ज़ल आदि बनाकर "ज्ञानदर्पण" नामक पुस्तक तैयार करके छपाकर प्रचार किया था, बाद को संन्यास लिया था। साधु भेष लेने के बाद भी पद बनाता ही रहता हूँ। एक पद रोज बनाता, दूसरे दिन उसका मनन करना , यह नित्य नेम अभी तक चालू हैं। हजारों पद, जिसकी संख्या याद नहीं है, बनाये थे और श्री गंगा जी के जल में प्रवाह कर दिये और करता रहता हूँ। श्री गंगा जी के जल में बहाने का कारण यह है कि वैराग्य और प्रेम की अवस्था में भगवान की प्रेरणा से जो पद लिखे जाते हैं, अपना भाव प्रकट करके नारायण को सुनाने के लिये है। दूसरों को सुनाने से गुत भेद प्रकट हो जाता है। वह भाव नीचे गिरने लगता हैं। कभी भगवान के विरह में लीन होकर दीवारों पर लिख देता था। भक्त जन उनको लिख लेते थे और पुस्तकों में देख कर भजन गाते थे और नकल कर लेते थे। इसी प्रकार भक्त जन एक दूसरे को लिखाते रहते थे। उन लोगों के पास कुछ भजन लिखे हुए थे। प्रेमी भक्त जन बहुत समय से भजन छपाने को कहते रहते थे। इसलिए उन लोगों से मंगवाकर उनका सुधार करके छपाये गये हैं।

यह पद उस समय के बनाये हुए हैं जब बहुत वैराग्य था और विरह के दुख से जल धाराएँ नेत्रों से चलती रहती थीं। श्री बद्रीनारायण जी महाराज के दर्शन होने के बाद कई पुस्तकें जो भजनों से भरी हुई श्री जगन्नाथ भाई के मुकाम डबोई गुजरात में बक्से में बंद कर रखी थीं, मंगवा कर हरिद्वार में श्री गंगा जी में जल प्रवाह कर दिया था। उसके बाद श्री गुरुदेव जी श्री बद्रीनारायण जी की आज्ञा से पदों का लिखना बंद कर दिया। अब गुप्त रीति से नित्य लिखता हूँ और जल-प्रवाह करता रहता हूँ।

इन थोड़े से पदों के गाने से ही वैराग्य और प्रेम हृदय में उत्पन्न होगा । भगवान की ओर लगेगा और आनंद आवेगा। जो भक्तजन ऊँचे दर्जे पर पहुँचे हुए हैं उनको गायन करने से

विरह में नेत्रों से अश्रुपात होगा। इन थोड़े से पदों के दो भाग कर दिये हैं। एक भजन आदि और दूसरा केवल गजल-यात का।

राग-रागिनी में बहुत से भजन बनाये गये हैं और राग का नाम ऊपर लिख दिया गया है। जो लोग गाना जानते हैं वह राग-रागिनियों में गाने और जो नहीं जानते हैं, वे अपनी लय में जैसा चाहें गा सकते हैं। गाना और रोना सबको ही आता है। यह विचार न करें कि हम राग-रागिनी नहीं जानते, पदों का गाना छोड़ दें। इस प्रकार वे गाना चाहें आनंद से गा सकते हैं। केवल प्रेम भाव और शब्दों का आनंद लेने की आवश्यकता है, वैराग्य और भक्ति बढ़ेगी।

मन गायन करने से सब तरफ से हट कर गाने में लग जाता है। अगर मन चला जाये तो गायन कर ही नहीं सकते। ताल, स्वर के साथ गाने में गाना बिल्कुल वश में आ जाता हैं, कहीं हट नहीं सकता। इसी कारण प्रेमी भक्त-जन को गाना सुनने और गाने से अश्रुपात होने लगता है। गाने का मन पर बहुत ही प्रभाव पड़ता है। स्त्री पुरुष सबको नित्य थोड़े देर कीर्तन करना चाहिए। संसार की चिंताओं में मन यदि दुखी हो रहा हो तो उस समय गाना आरम्भ कर दीजिए, चिंता हट जायेगी। जीवात्मा को प्रसन्न करने के लिए यह गान विद्या बनाई गई है। संसार की लीलाओं में सब से उत्तम गान विद्या है।

गज़लयात के दूसरे भाग में राग-रागिनी कुछ नहीं लिखी गई है। गजलों की जो मामूली तरजें हैं उन्हें अधिकतर सब जानते हैं। बहुत सरल है। जिस लय पर जो गाना चाहे गा सकते हैं, प्रेम भाव होना चाहिए। गाने का आनंद बाजा, तबला तथा ढोल के साथ अधिक आता है।
इस छोटी सी पुस्तक को नित्य पढ़ना और नित्य दो-चार भजन रोज गाना चाहिए और कंठ करके दूसरों को भी सुनाना चाहिए। भक्ति का प्रचार होकर सबको लाभ मिलेगा।

सब मिल कर प्रेम से बोलो तो सही ....

"सनातन धर्म की जय हो!"

– नारायण दास परमहंस

— ✻ —

पहला भाग

ॐ नारायण

❀ भगवान से प्रार्थना है। ❀

भजन

(१)

हे दयामय हम सबों को, शुद्धताई दीजिये।

नीति तुम्हारी पर चलें, वो बुद्धि हमारी कीजिये।। हे...

(२)

कलियुग की उलटी रीति, अनीति से भरी।

बुरें कर्मों से बचें, इतना तो हम पर रीझिये।। हे...

(३)

टेर हम गरीबों की, तुम बिन सुनेगा कौन।

जल्दी हरो इस पीर को, विनती यही सुन लीजिये।। हे...

(४)

चरणों में तेरे मन लगे, भक्ति अटल रहे।

ध्यान में तेरे मगन रहें, प्रेम रस को पीजिये।। हे...

(५)

रखोगे लाज तुम्हीं, नहीं ठौर दूसरा।

नारायण की नाव बह रही, अब वेग उसको खींचिये।।

— ✻ —

❀ राग प्रभाती ❀

जय जय जगदीश ईश, ध्यावहु मैं तुम्हरो।

(१)

तुम्ही मेरे माता पिता, भाई बंधु गुरु हो।

और नहीं कोई जग में, तेरा भरोसा भारी ।। जय..

(२)

हर भाँति से रक्षक मेरे, इस देह के तुम हो।

सुख दुख हैं प्रारब्ध का , तुम हो सदा सुखकारी ।। जय..

(३)

ठौर नहीं कोई मुझे , द्वारे किसके जाऊँ।

अब तेरी शरण आन पड़ा, दास दीन भिखारि ।। जय..

(४)

रखो या ना रखो लाज , मर्जी जो तुम्हारी।

यह दास तेरा हो चुका, चरणों की बलिहारी।।

(५)

प्यास दर्शन की तेरे, लागी अति मुझे ।

'नारायण' तुम्हारी दयालुता , रहता सदा निहारी ।। जय..

— ✻ —

❀ प्रार्थना - राग श्याम कल्याण ❀

(१)

दीन बन्धु दीनानाथ, लेना सुधि हमारी।

करुणा निधि दुख हरन जान, शरण आयो तुम्हारी॥ करुणा निधि..

(२)

सत चित आनन्द सदा, सर्व व्यापी सुख रूप।

निर्गुण सर्वगुण निधान, निगम अगम निर्विकारी ॥ करुणा..

(३)

रचना का तेरी अन्त, नहीं आज तक मिला।

विश्व रूप शक्ति मान, लीजियो उबारी॥ करुणा निधि..

(४)

अविनाशी अन्तर्यामी, और मोक्ष के दाता।

निरुपण गुणों का कर न सके, गये सब हारो ॥ करुणा..

(५)

अनेक नाम जगत पिता, गाते वेद शास्त्र।

'नारायण' ही नित्य रूप हैं, कभी न बिसारी ॥ करुणा..

— ✻ —

❀ श्री गुरुदेव की स्तुति ❀

राग हमीर

(१)

गुरु बिन कौन करे, भव पार।

दया ही गुरुदेव की, सार॥ गुरु बिन..

(२)

कठिन पंथ है, प्रभु मिलन को।

गुरु बिना नहीं, कोई आधार॥ गुरु बिन..

(३)

पल पल छिन छिन , राह बतावें।

हटावें, पाप कर्म का भार॥ गुरु बिन..

(४)

गुरु वचन को, सिर पर चढ़ावे ।

प्रेम से देखे , जग की बहार॥ गुरु बिन..

(५)

गुरु करें तो , सोच समझ कर।

उनकी परीक्षा , करे निहार निहार॥ गुरु बिन..

(६)

पूर्ण निश्चय , गुरु चरणन में 'नारायण'।

हरि दर्श , करावे तोहे बारम्बार ॥ गुरु बिन..

— ✻ —

(५)

❀ नारायण नाम की महिमा ❀

– राग खमाज

(१)

नारायण जिन नाम लिया, तिन और का नाम लिया न लिया।

अमृत पान किया घट भीतर, गंगा जल फिर पिया न पिया॥

नारायण जिन..

(२)

सेवा पूजा ध्यान नारायण, निशदिन करते प्रेम सहित जी।

वो अधिकारी बने बैकुंठ के, और कर्म कुछ किया न किया॥

नारायण जिन..

(३)

तन मन धन सब भेंट किया, विश्वास राख हरि चरणन में।

दास हरि बन काज करते, ते कछु दान दिया न दिया॥

नारायण जिन..

(४)

सत्य वचन का पालन करके, नित्य कर्म शुभ ही करते रहो।

जीवन मुक्त विचरते जग में, 'नारायण' सो जिया न जिया॥

नारायण जिन..

– ✻ –

* गिरिराज धरन से प्रार्थना *

राग हमीर

(१)
गिरधर तुम बिन, कैसे चैन पड़े।
तेरे दर्श बिना कैसे पीर हरे॥ गिरधर तुम..

(२)
जनम लो नन्द घर, बधाई देवें।
तुम संग सुख से, गऊ बन चरें॥ गिरधर तुम..

(३)
मुरली हाथ में, तिरछा चरण हो।
ये झांकी दो, मन धीर धरें॥ गिरधर तुम..

(४)
रास रचो तुम, गोपिन संग में।
लीला दिखा दो , दुख टरें ॥ गिरधर तुम..

(५)
ग्वाल बाल संग, माखन चुराओ तुम।
सखा बनाओ हमें , तो काज सरें॥ गिरधर तुम..

(६)
गिरिराज उठायो तुम, हम लकड़ी लगावें ।
ब्रजवासी सुखी हों, आनन्द करें॥ गिरधर तुम..

(७)
हाथ पिला कर तुम्हें, नाच नचायें गोपी।
'नारायण' यह छवि निरख, भव पार तरें ॥ गिरधर॥

— * —

(७)

* राग पीलू *

(१)

अब तो प्रभु जी, बनाय बनेंगी। अब तो..

बनाय बनेंगी, प्यारे निभाये बनेंगी॥

(२)

तुम्हारे मिलन को, सब सुख छोड़ा।

दर्शन न दोगे तो दुनिया हँसेगी॥ अब तो..

(३)

छोड़ के तुमको, जाऊँ कहाँ मैं।

कृपा ना होगी, तो कुल की लजेगी ॥ अब तो..

(४)

दास 'नारायण', रो रो पुकारे।

तुम्ही रखोगे, तो लाज रहेगी॥ अब तो..

— * —

खमाच दादरी (आसावारी – झपताल)

नैनन में राखूंगी, पिया तोहे।

(१)

आओ प्रभु जी मोरे नैनन बिराजो ।
पलकन की सेज बिछाऊंगी ॥ पिया तोरे॥

(२)

मुकुट -पीताम्बर, बन माला पहनाऊं तुम्हें।
भोग लगाके फिर, चाखूंगी ॥ पिया तोरे..

(३)

प्रेम की बतियाँ , करोगे मोसे ।
काहूँ से नाहीं, भाखूंगी ॥ पिया तोरे..

(४)

चरणों कीरज को , सुरमा लगाऊं ।
निरख निरख बल जाऊंगी जी॥ पिया तोरे..

(५)

नाम की तेरे, रटन करूँगी मैं।
रात दिवस ही, जागूंगी ॥ पिया तोरे..

(६)

हृदय से पल भर , त्यांगू न प्यारे।
सुरती तुम्हीं से , लगाऊंगी ॥ पिया तोरे..

(७)

दास च्नारायणज् गुरु दर्श बिन रोवे ।
प्रेम के पद, गा रिझाऊंगी ॥ पिया तोरे..

– ✻ –

भजन करने में नींद के झोंके आते थे तब नींद जी को समझाया था।

तर्ज होली - राग काफी

वाही घर जाओरी नींद, जहाँ राम नाम नहीं भावे ।

(१)

मखमल के जहाँ बिछे गदेले , रेशम के लगे तकिये।
पलंग लगी हो मच्छर दानी, टांट पर क्या पावे ॥

वाही घर...

(२)

ऊँचे ऊँचे महल बने हैं, लगी हो खास की टाटी।
बिजली के वहां चले हैं पंखे , दुख में वृथा धावे॥

वाही घर...

(३)

भांती भातीं के भोजन करते, सुख से देह को रखते ।
हम भीख माँग के टुकड़े खाते , शरम तुमको नहीं आवे॥

वाही घर...

(४)

भोगों में जहाँ प्रेम रहत हैं; विषयों में मन लावे ।
हम तो भजन ध्यान में लागें, क्यों नहीं वहाँ से खोवें॥

वाही घर..

(५)

कहें 'नारायण' सुनो भाई निद्रा, छोड़ हमारा पीछा।
प्रभु मिलन को हुए हैं साधु , क्यों तू हम सतावे॥

वाही घर..

— * —

(१०)

* सेवा -भाव *

भजन राग पीलू

(१)

प्रभु तेरे दर, की मैं झाड़ू लगाऊं ।

भाग उदय हो, सेवा जो पाऊँ॥ प्रभु तेरे...

(२)

तेरे महल की, चादर बुनूँगा।

चरण की रज, जो मस्तक चढ़ाऊँ॥ प्रभु जी...

(३)

अपने प्यारे का, तकिया बनूँ।

हरि शयन करे, तो अंग दबाऊं ॥ प्रभु तेरे..

(४)

अपने सरकार की, थाली बनूँ मैं।

भोग लगावें तो झूठन खाऊँ॥ प्रभु तेरे...

(५)

अपने सरकार का, पीताम्बर बुनूँ मैं!

जो धारण करें तो देह लिपटाऊं !! प्रभु तेरे...

(६)

सेवा करूँ, तन मन से 'नारायण'।

फिर दास धर्म को, पूरा निभाऊँ॥ प्रभु तेरे...

— * —

* राग भैरवी *

(१)

जाऊँ कहाँ, तज चरण तुम्हारे।

मेरा जीवन है, केवल तुम्हारे सहारे॥ जाऊँ कहाँ...

(२)

पकड़ लिया मैंने, तेरा पीताम्बर।

मन भावे सो, करो अब प्यारे॥ जाऊँ कहाँ...

(३)

चौदह लोक का, राज्य नहीं चाहूँ।

ठौर नहीं कहीं, यही विचारें॥ जाऊँ कहाँ...

(४)

सब सुख छोड़ा, तुम्हरे मिलन को।

तन मन धन सब, तुम पर वारें॥ जाऊँ कहाँ...

(५)

सनमुख रहो सदा, मेरे प्रभुजी।

यही वर माँगूँ, हाथ पसारे ॥ जाऊँ कहाँ...

(६)

दास 'नारायण' मन, किस विधि समझावै।

नहीं चैन पड़त, कहीं तुमसे न्यारे॥ जाऊँ कहाँ...

— * —

❀ श्री वृन्दावन-बिहारी जी से प्रार्थना ❀

ग़ज़ल

(१)
कब तक हमें दिलाएंगे , दर्शन बिहारी जी।
अर्जी पर हुकुम दीजिये, प्यारे बिहारी जी॥ कब तक...
(२)
तुम मित्र मेरे गाढ़े , पिछवले जन्म से हों।
इतनी तो कृपा हम पर, करना बिहारी जी॥ कब तक...
(३)
करूना सदा करते हो, धन्यवाद दूँ तुम्हें।
मिट जाये दुख मिटायें, तुम्हारे बिहारी जी॥ कब तक...
(४)
माथुर कायस्थ जाती के , हो इष्ट देव तुम ।
हमको तो तुम ही , सबसे न्यारे बिहारी जी॥ कब तक...
(५)
जाएगी लाज आपकी , दर्शन अगर न दोगे।
कर्म हीन समझ मुझको , निहारें बिहारी जी॥ कब तक...
(६)
रूठे न आप भगतों से , यह डर मुझे बहुत।
भक्तों के लाड़-चोचले , न्यारे बिहारी जी॥ कब तक...
(७)
कहाँ तक हमें रुलावोगे , यह पूछता 'नारायण'।
दिन रात यही मन में , बिचारें बिहारी जी॥ कब तक...

— ✻ —

(१३)

* भगवान से प्रेम करोगे तो विषयों से मन हट जायेगा *

राग केदार

(१)

जो मोहि राम लागते मीठे।

विषय रस सारे लागते फीके॥ जो मोहि॥

(२)

प्रेम भाव प्रभु सों नाहीं।

मनोरथ कैसे हो पूर्ण जीके ॥ जो मोहि॥

(३)

हरि छोड़ करे आस पराई।

वचन भगत जन लागते तीखे ॥ जो मोहि॥

(४)

दो अब ऐसी बुद्धि 'नारायण'।

चरण दरस ही लागें नीके॥ जो मोहि॥

— * —

(१४)

* मनुष्य जन्म हरि भजन को, बार बार नहीं मिलता *

राग देस

नहीं ऐसौ जनम बारम्बार – टेक

(१)

बहुत जन्म के शुभ कर्मों से, मिला मनुष्य अवतार।

मनीराम अब जल्दी चेतों , हरि नाम है सार॥ नही ऐसो..

(२)

भगवत सुमिरन शुभ कमाई, इसी देह से होय।

ईश्वर से जो मिलना चाहो, बेगि उतरो पार॥ नहीं ऐसो..

(३)

कलयुग में हरि-दर्शन, बहुत सुलभ है तोहे ।

मन पापी मेरे मान कहा मेरा, अपने जिया में धार॥ नही ऐसो..

(४)

संसार काज में क्यों दुख पावे, मानो रूप भगवान।

होनी होय सो होने देना, कहें करत विचार॥ नहीं ऐसो..

(५)

मन प्यारे क्यों देर करत है, हो जाओ होशियार।

'नारायण' कहाँ देख रहे हो, चार दिनों की बहार॥ नहीं ऐसो..

— * —

(१५)

❀ मनमोहन को समझाओ ❀

राग काफी तर्ज होली

(१)

मन तू हरि को क्यों नहीं याद करे—
वह तो भव-सागर से तुझे पार करे। क्यों नहीं..

(२)

जन्म जन्म के पाप मिटें तेरे,
हरि को भजे मन लगाई।
यम के दूत तोहि लेने न आवें,
काहे को उनसे डरे॥ क्यों नहीं..

(३)

दृढ निश्चय राखो प्रभु नाम पे,
आस तजो सब पराई।
कारज पूर्ण हों सब तेरे,
दुख में वृथा पड़े॥ क्यों नहीं..

(४)

कोई समय तो रात दिवस में,
देना भगवत को अवसर ही।
सब कुछ देवे जो हमको सदा ही ,
नाहक भटकत फिरे॥ क्यों नहीं..

(४)

भजन करन को आलस न करना,
होनी होय सो होई ।
'नारायण' की सीख तुम मानो,
वचन नहीं टारे टरे ॥ क्यों नहीं..

— ✻ —

(१६)

नारायण की सेवा करते समय यह पद रोज़ गाना उत्तम हैं ।

राग भीम विहागी

ग़ज़ल

(१)

गुन गाऊँ अपने प्रभु के, मैं रोम रोम से।

बुलाऊँगा अपने प्यारे को, मैं रोम रोम से॥ गुन गाऊँ..

(२)

सेवा प्रभु दयाल की, नित नेम से करूँ।

माला पहिराऊँ पुष्प की, मैं रोम रोम से॥ गुन गाऊँ..

(३)

दासों का दास अपना , बनालो मुझको भगवान।

धन्यवाद दूँ सरकार को, मैं रोम रोम से॥ गुन गाऊँ..

(४)

दर्शन हो अष्ट पहर ही सेवा चरण करूँ।

झाँकी निहार खुश हूँ, मैं रोम रोम से॥ गुन गाऊँ..

(५)

पालन हो आज्ञा का, जो हुक्म दे हुजूर।

सेवक धर्म निभाऊँगा, मैं रोम रोम से॥ गुन गाऊँ..

(६)

इस जीव को अमर करो, यह सुख मिले तब ही।

'नारायण' ही नाम लेऊँगा , मैं रोम रोम से॥ गुन गाऊँ..

— * —

❀ मौन रखने से लाभ ❀

राग कालिंगड़ा या धनाश्री–

मौन बिना सुख नाहीं जगत में।

(१)

निन्दा झूठ कपट से बचोगे।
वृथा समय नहीं जाई जगत में॥ मौन बिना..

(२)

कुटिल वचन और क्रोध न होवे।
शान्ति बहुत ही पाई जगत में॥ मौन बिना..

(३)

वासना मन की कम हो जाएगी ।
भजन करे चित्तलाई जगत॥ मौन बिना..

(४)

वृथा भापण बुरे कर्म छूटे।
ऊँची गति को धाये जगत में॥ मौन बिना..

(५)

जितना बने सो करना 'नारायण'।
सत्य को पदवी पाई जगत में॥ मौन बिना..

– ✻ –

(१८)

❀ हृदय से जप करने से लाभ ❀

राग खम्माज

(१)

भजन करे तो हृदय से हो , शब्द सुना नहीं जाये ।

होठ हिले न, जिव्हा चले ना, मन में ही सुमिरन भाये ॥भजन..

(२)

ध्यान धरे इष्ट देव का , नाम रट ले हाथ सुमरनी ।

चलते फिरते खाते पीते, स्वाँसा के संग चितलाये ॥भजन..

(३)

नाम का सुमिरन करे जोर से, वह बाहर ही रह जाये ।

अन्तश की शुद्धि नहीं करता , हृदय में न समाये ॥भजन..

(४)

कीर्तन द्वारा भजन जो करते , फल थोड़ा ही मिलता ।

हज़ार गुना फल मानसिक जप का , मनुस्मृति में बतलाये ॥भजन..

(५)

रोम रोम की शुद्धि करता , जप हृदय से हो दिन रात ।

'नारायण' उन्हें दर्शन देवें , मोक्ष ही पद को पाय ॥भजन..

— ✻ —

❀ मन को समझाओ ❀

तर्ज होली - राग काफी

(१)

मन कौन गति तेरी अब होई ।

तेने यह जीवन वृथा ही खोई ॥ कौन गति..

(२)

प्रभु की खुशी का कोई काम न कीना सदाज।

राम नाम जिनके मन भावे, हरि का पियारा सोई ॥ कौन गति..

(३)

भगवत विमुख का मुख नहीं देखे , पाप लगे मुख देखे ।

तुम सा पापी कौन जगत में, बीज पाप नित बोई ॥ कौन गति..

(४)

बैतरनी नदी से पार कैसे होंगे, कुटुम्बी नहीं वहां साथी।

दुखी होये कष्ट से पछतई हो, सिर घुन घुन कर रोई ॥

(५)

दास नारायण कहे मन मूरख, जो कुछ रही सो संभारो ।

खाली हाथ परदेश न जाना, है अन जाना सब कोई।। कौन गति..

❀ नारायण कृपा की सबको आवश्यकता है। ❀

— ✻ —

✿ रागनी बिहरन ✿

इस तर्ज पर गावा – [नाग कैसे गज के फंद छुड़ावे]

(१)
'नारायण' तेरी कृपा ही से मोक्ष पावे।
मुझे सबसे अधिक तेरी कृपा ही भावे ॥ कृपा ही
(२)
जिन पर कृपा नहीं होवे तेरी, सुख नहीं पावे जगत में।
हस्त कमल तेरा हो जिन ऊपर, तू ही हाथ पकड़ मार्ग बतावे ॥कृपा ही..
(३)
जप तप साधन जो कुछ होवे, शुभ कर्म ध्यान तेरा।
तेरी कृपा बिन कुछ नहीं बनता, तू ही हाथ पकड़ मार्ग बतावे ॥ कृपा बिन..
(४)
हरि कृपा साग भाजी नहीं है, बाजार से जो तुरंत ही मंगावे।
नाना प्रकार के साधन करावे, तो तब ही प्रभु अपनावे ॥ कृपा बिन..
(५)
संसार सारा यही पुकारे, भगवत कृपा ही सब चाहें।
नीच कर्म दिन रैन करें हम, भगवान को फिर क्यों दोष लगावें॥ कृपा बिन..
(६)
नीति वेद शास्त्र पर चलते, कृपा मात्र वे ही बनते।
भजन सत्य भाषण में निष्ठा वे राखें , वे मुरलीधर ही निभावें ॥ कृपा बिन..
(७)
कहें 'नारायण' सुनो भाई भगतो, रटते रहो हरि नाम सदा ही।
कभी तो दयालु करेंगे कृपा कृपालु , वे निज धाम अपने बुलावें॥

— ✱ —

✿ राग हमीर ✿

✿ भजन जंगला ✿

इस तर्ज पर गावे – (नारायण जिनके परिपालक वो कुछ कर्म करें ना करें)

(१)

नारायण जिनके हृदय में

तिनने सब कुछ पाया जगत में ॥ नारायण जिनके...

(२)

निश दिन नाम जपत नारायण,

और नहीं कुछ माया जगत में ॥ नारायण जिनके...

(३)

जहाज मिला भव-सागर तरने को,

शुभ कमाई को आया में ॥ नारायण जिनके...

(४)

ये चार अक्षर मोक्ष के दाता,

जन्म जन्म के पाप मिटाये जगत में ॥ नारायण जिनके...

(५)

जिन घर सेवा करें नारायण,

ते नर लक्ष्मी लाया जगत में ॥ नारायण जिनके...

(६)

जो जन कीर्तन करत सदा हैं,

— ✱ —

सो नित तीर्थ नहाया जगत में ॥ नारायण जिनके…

(७)

'नारायण' कहन तेरे नाम की महिमा,

चमत्कार बहुत से दिखाया जगत में ॥ नारायण जिनके…

❀ 'नारायण' की भक्ति करने से जन्म जन्म कृपा करते रहते हैं। ❀

— ✻ —

राग हमीर या आसवारी तीन ताल

(१)

नारायण मेरे जन्म जन्म के साथी।

मैं तो याद करूँ दिन राती ॥ जन्म जन्मज

(२)

मन मोहिनी मूरत प्यारी लागे मोहे।

मुकुट-पीताम्बर मेरे मन को लुभाती॥ जन्म जन्म...

(३)

पिछले पाप सों , हरि चरण बिसरी गए।

अब तो प्रीति जगत नहीं भाती ॥ जन्म जन्म...

(४)

भाग उदय भये प्रभु अपनाये।

छाड़ी दई कायस्थ की जाती॥ जन्म जन्म...

(५)

'नारायण', कहे मन कैसे समझाऊँ।

हरि दरस बिना मोहिं कछु न सुहाती॥ जन्म जन्मज

❀ नारायण से प्रेम दिन दिन बढ़ाते ही रहो। ❀

— ✻ —

(२३)

खम्माच दादरा

दिन दिन प्रीति अधिक मोहे हर की।

(१)

सब रस फीके लागें जगत के।

मन मोहिनी मूरत मन में खटकी॥ दिन दिन०

(२)

जीवन प्राण तुम्हीं हो मेरे।

अब तो नाव तुम्हीं से अटकी ॥ दिन दिन०

(३)

प्रेम की रीति, सावलियां ही जाने।

अन्तर्यामी जानत घट घट की ॥ दिन दिन...

(४)

जनम जनम नहीं भूलूं मैं तुमको।

गाठी पापन की 'नारायण' पटकी ॥ दिन दिन...

———

भगवान श्री द्वारकाजी से भक्त के साथ डाकोर गुजरात में आये थे अलौकिक स्वरूप है। इसी स्वरूप में द्वारका में मीरा जी समा गईं थीं।

— ✻ —

राग केदारा

(१)

लगन लागी चतुरभुज श्याम से।

आस लगी चरण कमल निज धाम से ॥ चतुरभुज श्याम...

(२)

शंख, चक्र, पद्म , गदा, विष्णु रूप से।

बलिहारी, कोटि बार उस नाम से ॥ चतुरभुज श्याम...

(३)

श्री रणछोड़ लालजी मित्र हमारे।

अति प्रेम श्री डाकोर बैकुंठ ग्राम से ॥ चतुरभुज श्यामॅ

(४)

सर्व कला से प्रभु बिराजे गुजरात में।

'नारायण' स्तुति करे, लाखन बार प्रणाम से ॥ चतुरभुज०

———

शरीर छोड़ते समय नीचे लिखी हुई अवस्था का वरदान भगवान से मांगों, इस पद को रोज गाना चाहिए।

— ✻ —

* राग भैरवी *

(१)

करुणा निधान स्वामी, इतनी दया हो करना।

यह देह छोड़ते समय, दर्शन तो आके देना ॥ करुणा...

(२)

स्वासों के संग नाम, लेता रहूँ तब भी।

दर्शन चतुरभुजी हो, इच्छा न मन में होना ॥ करुणा ...

(३)

हरिनाम कीर्तन हो, यही प्रार्थना के समय।

गंग में जब समाधि, दास की भी होना ॥ करुणा ...

(४)

तुलसी जी निकट हो, दीपक से भी सजी हो।

'नारायण' खड़े हो सनमुख, दृष्टि तुम्हीं पर रहना ॥ करुणा ...

———

❀ संसार में हरि भजन ही सुखदाई है। ❀

— ✱ —

(२६)

✻ राग भैरवी ✻

(१)

हरि भजन बिना सुख नाहीं जगत में।

करके देखो मेरे भाई ॥ भजन बिना...

[२]

साधन योग नहीं बनता कलियुग में,

वृथा कष्ट क्यों पाई। भजन बिना...

(३)

साकार रूप की पूजा सेवा भजन करो,

अन्तकाल सुख धाम को धाई ।भजन बिना...

[४]

लोक परलोक फिर दोनों बने तेरे,

मन माने पदार्थ लाई ।भजन बिना...

[५]

लक्ष्मी नारायण तेरे घर में डोले ,

आनन्द से जीवन कटे भाई। भजन बिना...

[६]

प्रालब्ध भोग से दुख नहीं पावे,

कष्ट से प्रभु जी बचाई । भजन बिना...

— ✻ —

[७]

भक्ति ज्ञान दो टाँगे मनुष्य की,

एक टाँग से नहीं चलाई। भजन बिना...

[८]

सार ज्ञान यही द्वेष को त्यागे,

जगत ईश्वर रूप दिखाई। भजन बिना...

(९)

भक्ति मारग वाले मोक्ष नहीं चाहें,

जगदीश दर्शन बिना नहीं भाई। भजन बिना...

[१०]

समर्थ नहीं कोई करे बड़ाई,

भक्ति माता दास को निभाई। भजन बिना।

[११]

सनातन धर्म की नीति मूर्ति पूजा,

प्रेम विश्वास 'नारायण' में कराई । भजन बिना...

— ✻ —

विरह का दुख वर्णन – भजन

(१)

प्रभु मिलें कब हमारे नैनों के तारे,जगत उजियारे। मिलें...

[२]

कौन यत्न से मिलूं प्रभु तुमसे,दुलभ दर्श तुम्हारे। मिलें...

[३]

श्री भगवान सुनो मेरी विनती,दीनन के पालन हारे। मिलें...

[४]

दुखित हूँ तेरे विरह से,तुम बिन कौन निहारे। मिलें...

[५]

हरी बिन कैसे कटें दिन हमारे, नैन भये दुःखियारे।

[६]

तुम्हारी कृपाही पार लगावे, मन में यहीं धारें । मिलें...

[७]

सर काटे अविनाशी मिलेंगे, यह सुन सोच है भारी। मिलें..

[८]

मुझमें शक्ति नहीं भगवन, नारायण नारायण ही पुकारे। मिलें..

[९]

कठिन पर चलूँ हूँ प्रभु, बल भरोसे तुम्हारे 'नारायण' विचारे। मिलें

[१०]

तारो न तारो मर्जी नाथ की, दास नारायण विचारे। मिलें..

— ✻ —

❀ प्रभु जी से प्रार्थना ❀

भजन – राग – खम्माच

(१)
नटवर तुमको मेरी लाज,
तुम्हीं बनाओ सब काज ॥ तुमको...
(२)
कृपा दृष्टि होवें नाथ की,
तब ही उदय होंगें भाग ॥ तुमको...
(३)
माया जगत की नहीं माँगू,
दो अपने चरण का राज ॥ तुमको...
(४)
मोक्ष नहीं चाहूँ, भोग न भावे,
सदा रहूँ मैं तेरे साथ ॥ तुमको...
(५)
सेवा करूँ दिन रैन तुम्हारी,
जन्म जन्म की निद्रा से जाग ॥ तुमको...
(६)
झाँकी निहार हरदम सरकार की,
प्रेम मगन हो नाचूँ नांच ॥ तुमको...
[७]
निश्चय रक्खो मन, कहें 'नारायण',
तो भव तारन को विचित्र जहाज ॥ तुमको...

— ✻ —

(२९)

❀ विरह की अवस्था है ❀

रागनी खम्माच

[१]

हरि बिन कैसे चैन पड़े।

वो ही हमारा दुःख हरे ॥ कैसे चैन...

[२]

प्रभु दर्शन मोहे सुखदाई।

तिरछी चितवन मोहे प्यारी लगे ॥ कैसे...

(३)

बाँकी छवि मेरा जिया लुभावे।

हरि मुस्कान अलौकिक कटाक्ष करे ॥ कैसे चैनज

(४)

उनकी बतियाँ अति मीठी लागें।

सुन सुन मन सन्तोष धरें ॥ कैसे चैनज

(५)

प्रभु जी अपनी गोद बिठावें।

नैन रहें फिर जल से भरे ॥ कैसे चैनज

(६)

यह सुख अद्वैत में नाहीं।

'नारायण' के चरण पकड़ तरे ॥ कैसे चैनज

— ✻ —

❀ गृहस्थियों को उपदेश है ❀

ग़ज़ल

(१)

प्रभु चरण का प्रेम रस भाया नहीं, गृहस्थी हुए तो क्या हुआ।

जिन सनातन धर्म गृहस्थ का निभाया नहीं, गृहस्थी हुए...

(२)

केवल पालन कुटुंब का करना, ये ही धर्म तुम जानो सदा।

करें साधु निंदा, सेवा से लाभ पाया नहीं, गृहस्थी हुए...

(३)

पैसा कमावें रात दिन, सत्य असत्य से निर्भय होकर।

शुभ कर्मों का विचार मन भाया नहीं, गृहस्थी हुए...

(४)

राग, द्वेष, क्रोध, लोभ, मोह खड़े सामने हर दम तेरे।

विश्व रूप भगवान तुमको दिखा नहीं , गृहस्थी हुए...

(५)

पढ़ पढ़कर वेद शास्त्र, गीता भागवत, उपदेश सबकों करते।

बीज भक्ति ज्ञान हृदय में लगाया नहीं, गृहस्थी हुए...

— ✱ —

(६)

सेवा साकार मूर्ति की, और भजन ध्यान नाम रूप का।

भगवत विरह के प्रेम में रोया नहीं, गृहस्थी हुए...

(७)

दुनियाँ के कार्यों में उमर सारी गंवाई वृथा सदा ही।

भक्ति के प्रेम से मन धोया नहीं, गृहस्थी हुए...

(८)

नाते कुटुम्ब देश भाई, देह से करते हो मोह सदा।

ईश्वर तन मन धन से रिझाया नहीं, गृहस्थी हुए...

(९)

भगवान तुम्हें अपनाकर गोद में बिठायें, जो नाम जप करोगे।

'नारायण' नाम तुम सबको सुनाया नहीं, गृहस्थी हुए...

❀ भगवान के भक्तों की वृत्तावस्था यह होनी चाहिए ❀

— ✻ —

(३१)

रागनी भैरवी

[१]

अपने प्यारे को पल भर न बिसारें।
उन बिन जीवन वृथा क्यों गंवावें ॥ पल भर०..

[२]

प्राण से अधिक जो प्यारा होवे।
पीछे लगे ही रहे जहाँ जावे ॥ पल भर०..

[३]

रैन दिवस में हृदय में राखें।
चलते फिरते उन्हीं के दर्शन पावे ॥ पल भर०..

[४]

जन्म सफल कर झाँकी से उनकी।
हृदय से पीर विरह की हटावे ॥ पल भर०..

[५]

उनकी श्‌आज्ञा से देह को चलाऊँ।
साधन जो करूँ कृपा से निभाऊँ ॥ पल भर०..

[६]

प्रेम की बतियाँ करूँ मैं उनसे।
जो दुःख हों उन्हीं को सुनावें ॥ पल भर०..

[७]

अति प्रेम हरिदास से राखें।
'नारायण' सबको दास भाव ही बतावें ॥ पल भर०..

— ✻ —

माया माता की लीला–

भजन भैरवी

नारायण तेरी माया लूटे बाजार।

[१]

ऋषि मुनि और देवता लूटे।

फिर ज्ञानी भगत जन हजार ॥ हजार तेरी माया..

[२]

राजी खुशी से गाय बजा के ।

धारे अनेक रूप करके श्रृंगार ॥ श्रृंगार तेरी माया..

[३]

हंस हंस करके मान बढ़ाई।

बर्बाद कर दीने लाखों घर बार ॥ घरबार तेरी माया..

[४]

माया ठगनी नरक ले जावे ।

संतो भाई रहना सदा होशियार ॥ होशियार तेरी माया..

[५]

कोई बिरले बचे कृपा से 'नारायण'।

लक्ष्मी माता पै जाऊं बलिहार ॥ बलिहार तेरी माया..

— ✻ —

(३३)

भगवान के दर्शन की जो लगी रहे।

रसिया

रसिया बन जा रे मन दर्शन को ।

[१]

उमंग उठे होली में जैसी , चरण पकड़ हरी भक्तन को॥ रसिया बन..

[२]

कृपा दृष्टि होवें नाथ की , नष्ट करे सब पापन को॥ रसिया बन..

[३]

लीन रहे गुन गान करन में , फिर पार नहीं इन शुभ कर्मन को ॥ रसिया बन..

[४]

प्रेम प्याला पी ले रे मनुआ , मतवाला रहे हरी चरनन को॥ रसिया बन..

[५]

कहे 'नारायण' मन मानो सीख मेरी, काहे नाम डुबावत भक्तन को॥ रसिया बन..

— ✻ —

मन को समझाते रहो

राग कालिंगड़ा

प्यारे मन हरि रंग से रंग जा।

[१]

बीत गई अब थोड़ी रही है, प्रभु के प्रेम रस में छकजा ॥ हरी..

[२]

जनम जनम के पाप मिटें तेरे, अब छोड़ निद्रासे जगजा ॥ हरी..

[३]

हरि मुस्कान कोट ब्रह्माण्ड हरे, हरि छवि का सुधा रस चखजा ॥ हरी..

[४]

छोड़ आस सब जग की 'नारायण' तूतो हरी चरनन में लगजा ॥ हरी..

— * —

गजल

[१]

नारायण तुम्हारी दयालुता हमको रुलाये है।

दास तेरी दयालुता, दुःख से बचाये है॥ नारायण तुम्हारी..

[२]

तुम सा कोई दातार, नहीं दीखता जगत में।

कृपा करी है जिन पर, उनको निभाये है॥ नारायण तुम्हारी..

(३)

आया शरण में जो तेरी , अपना लिया उसे।

चमत्कार अपनी दयालुता, उनको दिखाये है ॥ नारायण..

(४)

कैसा भी पापी हो कोई, जो भजे तुम्हेँ ।

उद्धार उसका हो गया , बिगड़ी बनाये है ॥ नारायण..

(५)

विश्वास प्रेम से करे , सेवा जो है तेरी।

सुख लोक परलोक देकर , उस पर लुभाए है ॥ नारायण..

(६)

तुम्हारी ही दयालुता पर, द्दढ निश्चय करके बैठे।

'नारायण' को इतना दास समझ , प्रेम बढ़ाये है ॥ नारायण..

— ✻ —

(३६)

* प्रेम भाव *

पीलू

(१)

मैं अपने प्यारे की जोगन बनूँगी , जोगन बनूँगी बैरागान बनूँगी ॥

(२)

सूली ऊपर सेज पिया की , सीढी भजन की लगा के चढूंगी ॥

(३)

मगन बन के अलख जागऊं , हरि ना मिलै तो प्राण तजूंगी ॥

(४)

दरदी की गति दरदी जाने, बेदरदी से कुछ न कहना कहूँगी ।

(५)

दुःख जो पड़ेंगे सहन करूंगी , मृत्यु भी आ जाये तो न डरूंगी ।

(६)

कहे 'नारायण' प्रेम रस पीकर, मगन होये मुक्त जीवन रहूंगी ॥

— * —

हरि दर्शन बिना जीवन व्यर्थ–

राग देश

हरि के दर्श बिना सब रंग फीके –

(१)

मुझ पापी घर प्रभु जी पधारें।
यह दिन कब आयेंगे नीके ॥ हरि के..

(२)

विरह की अगिन मेरा जिया जलावत।
जगत के पदारथ लागें तीखे ॥ हरि के..

(३)

ऐसा हो कोई पिया से मिलावे।
उन बिन सब अंधीयारों दीखे ॥ हरि के..

(४)

दुःख तो तभी मिटेगा न।
पूरन करी हैं मनोरथ जी के ॥ हरि के..

— ✻ —

गजल

(१)

छिपे रहोगे कहाँ तलाक तुम, पता तुम्हारा लगा ही लेंगे।
प्रेम की डोरी लगाकर, तुम्हें प्यारे बुलाही लेंगे ॥ छिपे..

(२)

बिरह की अग्नि जलाके हृदय, धुआं पहुँचायें तुम्हारे दर तक।
व्याकुल होवेगा मन तुम्हारा, तो प्रेम रस को बहा ही देंगे॥ छिपे..

(३)

बहा के आँसू तड़प तड़पके, व दोनों हाथों से कूट सीना।
विलाप मेरा सुनेंगे जब वे, जुदाई मेरी नहीं सहेंगे॥ छिपे..

(४)

विश्वास मन में यह दृढ़ किया है, मिलेंगे प्रभु तो प्रेम ही से।
बहेगी नेत्रों से जल की धारा, श्वास के संग हरि भजेंगे॥ छिपे..

(५)

प्रेम से मैं बुला रहा हूँ, पधारो जल्दी दयालु भगवन ।
कहे 'नारायण' मिलेंगे जिस दिन, हम प्रेम रस से तब ही छकेंगे ..

— ✻ —

नाम जप की महिमा–

भजन आसावारी

भजो रे मन कृष्ण गोविन्द हरि।

(१)

जिन भक्तों ने लिया तुम्हारा नाम।
नाम जहाज से सिन्धु तरी॥ कृपा गोविन्द..

(२)

मन की चंचलता मिटे भजन से ।
जन जन की विपत हरी ॥ कृष्ण गोविन्द..

(३)

निशफल न होवें नाम का लेना ।
प्रभु नाम की माला तिजोरी धरी ॥ कृष्ण गोविन्द..

(४)

जो वैकुण्ठ का मारग माला को समझो ।
मुझे मार्ग यह सरल जान पड़ी ॥ कृष्ण गोविन्द..

(५)

जो तुम नाम रटन नहीं कीना ।
जग में आये कुछ न करी ॥ कृष्ण गोविन्द..

(६)

ध्यान धरें तो जप से होवें
लगन रहे चित पाप हरी ॥ कृष्ण गोविन्द..

(७)

दास 'नारायण' कहे सभी से।
मनो मनोरम यह सीख मेरी।॥ कृष्ण गोविन्द..

— ✻ —

भगवान की स्तुति

राग पीऊ तीन ताल

प्रभु के कौन कौन गुन गाये ।

(१)

गुन से भरे हैं मेरे नारायण,

चरणों के जल से मलमल नहाये ॥ कौन कौन...

(२)

प्राण नाथ मेरे दयालु बहुत हैं ,

जो हम मांगें सोई पाये ॥ कौन कौन...

(३)

आँख उठाकर कोई देख सके नहीं,

अपने भगत के बल बल जाएँ ॥ कौन कौन...

(४)

कौन से मुख से गुन तेरे गाऊँ,

एक एक गुन मेरा मन को भाये ॥ कौन कौन...

(५)

कहे 'नारायण' सुन टेर भगतन की,

छोड़ गरुड़ को पैदल धाये ॥ कौन कौन...

— ✻ —

(४१)

विरह का रोग दूर करने को 'नारायण' ही डॉक्टर है।

राग प्रभाती

(तर्ज – मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरा न कोई)

हरि बिन दर्द न जाने कोई।

[१]

दुःख हमारा तब ही मिटेगा,

जब वैद्य 'नारायण' होई॥ दर्द न...

[२]

जो इस रोग का रोगी होवे,

जाने है पीर पराई सोई॥ दर्द न...

[३]

छिन नहीं चैन पड़त जिया को,

निश दिन अब रोवत ही खोई ॥ दर्द न...

[४]

प्रेम का बीज हम अब बोया,

'नारायण' कहे होनी होय सो होई॥ दर्द न...

– ✻ –

भजन करने के साधन, मन को समझाना,

भजन राग हिंडोल तीन ताल

(१)

करो मन हरदम हरिका जाप, मिटें तेरे जनम जनम के ताप।

(२)

हृदय से स्वाँसा संग जपकर , घड़ी सम चलता रहे दिन रात।

(३)

टुकड़े कर स्वाँसा के भजन कर, निकल जायें फिर रोम रोम से पाप।

(४)

बात करे तो भजन कट जावे, लावे पकड़ मन को स्वासों के साथ।

(५)

चलते फिरते जप कम होवे, बैठ करे घर ध्यान दिन रात।

(६)

यह अजपा जाप करे जो 'नारायण' पावे परम पद निश्चय यह बात ।

— ✱ —

* नाम की महिमा *

राग आसावारी

प्रभु हम गरीबों पै राखो दया।

(१)

निर्धन के धन राम सुने हैं,

यही विचार सुख पावे जिया॥ गरीबों पै..

(२)

हरि नाम तुम्हारा है सुखदाई,

दृढ़ निश्चय यह मन में किया॥ गरीबों पै..

(३)

नाम तुम्हारा पतित पावन बड़ा अन्तर्यामी,

जान रहे हो सब का हिया ॥ गरीबों पै..

(४)

राह कठिन है तुम्हारे मिलन की,

हस्त कमल सिर पर राखो पिया ॥ गरीबों पै..

(५)

दर छोड़ तुम्हारा जाऊं कहाँ मैं,

अब तेरा पीताम्बर पकड़ लिया ॥ गरीबों पै..

(६)

राखो चाहे न राखो दास तुम्हारा,

'नारायण' ने तन मन सौंप दिया ॥ गरीबों पै..

— * —

✻ माया माता की लीला ✻

भजन

(१)
माया ठगनी क्या नैना मटकावे,
तेरे हाथ नारायण नहीं आवे ॥ क्या नैना..

(२)
कोई समर्थ नहीं जो माया त्यागे ,
प्रभु कृपा ही तुमसे बचावे ॥ क्या नैना..

(३)
तेरा ही पसारा जहाँ दृष्टि जावे,
मन भगवान से तू ही हटावे ॥ क्या नैना..

(४)
लीला तेरी सब रैन का सपना,
सत को असत करके दिखावे ॥ क्या नैना…

(५)
माया जाल तू ऐसा फैलावे,
बुद्धि नष्ट करे फिर अंधा बनावे ॥ क्या नैना...

(६)
गृहस्थ साधु को नाच नचावे,
आप हँस हँस के ताल बजावे ॥ क्या नैना...

(७)
पुकार पुकार कहे सबसे 'नारायण',
अनन्य भक्त से ही माया लजावे ॥ क्या नैना…

— ✻ —

इस शरीर रूपी बंगले में नारायण बैठकर कैसी लीला कर रहे हैं।

भजन

बंगला अजब बना महाराज, जिसमें नारायण बोले ।

(१)

इस देह से मोह बढ़ाकर, भूल गये ठकुराई।

राजा बनके हुक्म करे, कहीं भीख मांगते डोले ॥ जिसमें...

(२)

अनीति असत की नाव चलाकर, पाप बहुत से करते।

बीच बजार में डंडी मारे, कभी न पूरा तौले ॥ जिसमें...

(३)

बैठ झरोखा इस बँगले में, खेल खिलाते सबको।

ब्याह करे दूल्हा बनके, सेहरा मुख पर सोहे ॥ जिसमें...

(४)

इस बँगले को खूब सजाकर , सबका जिया लुभाते ।

मटक मटक कर नैन घुमाते, चलते हौले हौले ॥ जिसमें...

(५)

माया मोह का जाल फैलाकर, कुटुंब कबीला रखते।

घर में मृत्यु होये तो, रो रो हृदय पड़े फफोले ॥ जिसमें...

(६)

बँगले वाला बहुत चतुर है, करते नित नये तमाशे।

'नारायण' तुम बचकर रहना, अंधा होये टटोले ॥ जिसमें...

— ✻ —

भगवान मिलने का मार्ग अति कठिन मनुष्य में ज्ञाता है।

राग भैरवी

कठिन पंथ हरि मिलन को पायो।

(१)

बहुत उपाय मैं करके हारो ,

चित्त सदा माया में ही भरमायो ॥ हरि मिलन...

(२)

विघन घने मार्ग में देखे,

दुःख अत्यन्त हृदय में लायो ॥ हरि मिलन...

(३)

जब से प्रभु मोहे अपनायो।

सब दुःख हरे विपदा से बचायो ॥ हरि मिलन...

(४)

गुरु कृपा मोहे पार लगावे।

जप ईश्वर 'नारायण' को भायो ॥ हरि मिलन...

— ✻ —

(४७)

* विरह के दुःख का वर्णन *

राग भैरवी

अँखियाँ हरी दर्शन की प्यासी।

(१)

श्याम दीवाना पीर उठत हैं।
अब रोवत हूँ दिन राती।। दर्शन की..

(२)

रैन कटत मोहि गिन गिन तारें।
प्रीती जगत की नहीं भाती।। दर्शन की..

(३)

क्या कहूं मोहे यह दुख भारी।
जगदीश बिना मोहे कुछ न सुहाती।। दर्शन की..

(४)

कहे 'नारायण' प्रभु रूठ गए क्या।
टेर सुनी तुम्हेँ दया नहीं आती।। दर्शन की..

— * —

इस तर्ज पर गाना (भये कैसे गज के फन्द छुड़ाए)

राग काफी होली

(१)

नारायण अब तू काहे को सोच करे।

तेरे सर पर मुकुट धारी हाथ धरें ॥ काहे को..

(२)

दुःख के दिन अब बीत गये, सुख के आय रहे।

रूप चतुर्भुज से दर्शन देंगे, प्रेम से हृदय भरें ॥ काहे को..

(३)

सागर दया के गुरूजी हमारे, निश्चय राख मनमाहीं धरें।

आशा करेंगे वे पूरन हमारी, वचन नहीं टारें टरे ॥ काहे को..

(४)

प्रेम के प्रभु जी प्रेम की सेवा, प्रेम के हाथ बिकाने।

अपने भक्तों का पहरा देते हैं, छिन नहीं चैन पड़े।। काहे को..

(५)

अपने भगतों के पीछे रहते, भागवत पुकार कहे।

ज्ञान योग को हम नहीं जाने, पच पच वृथा मरें।। काहे को..

(६)

प्राण नाथ प्यारे दासों पै अपने, कृपा राखे सदा ही।

'नारायण' कहे हरी भक्त करे जो, कारज सब ही सरे।। काहे को..

— ✻ —

(४९)

भगवान का विरह वर्णन

भजन

(१)

कहाँ गये प्रभु मेरे सुख दैन,

उन बिन चैन नहीं दिन रैन ॥ प्रभु..

(२)

तन मन सब न्योछावर करि हूँ ,

दर्श बिना तरस रहे नैन ॥ प्रभु..

(३)

प्रीती कमल नैन की नहीं बिसरे।

प्रिये लागे हरी तुम्हारे बैन।। प्रभु..

(४)

सुख मांगे सुख देत हैं 'नारायण'।

अपने भगतों के बन गए कामधेन।। प्रभु..

— ✻ —

प्रेम के पद बनाकर मगन रहे

राग भैरवी

(१)

नारायण अब काहे मगन नहीं होवे।
तेरे हाथ कलम प्रभु देवे।। काहे मगन..

(२)

गुनगान करना पदों को बना के।
आनंद में हो के हरदम रहवे।। काहे मगन..

(३)

चिंता मिटी सब दुख भागे।
हृदय बसें प्रभु दिन रैन रोवे।। काहे मगन..

(४)

दुनिया कहे ये साधु दीवाना।
प्रेम रंग में मन डुबोवे।। काहे मगन..

(५)

सब ही से ऊंची हैं प्रेम सगाई।
'नारायण' फिर नाहक ही दुखी होवे।।

— ✻ —

— ✻ —

साधु भेष की स्तुति

भजन दादरा

मन लागा हमारा फकीरी में। टेक

(१)

जो सुख पाया हरी भजन में।
वह नहीं पाया अमीरी में।। मन लागा..

(२)

रूखे सूखे टुकड़े गंगा जल पानी।
रूचि रूचि पाये सबूरी में।। मन लागा..

(३)

त्यागी हो कर विचारते जग में ।
मिले चौहदे लोक जागीरी में।। मन लागा..

(४)

'नारायण' के धन्य भाग हैं।
प्रभु मिलेंगे सबूरी में ॥ मन लागा..

— ✻ —

(५२)

* हरि नाम दरशनी ठुंडी *

राग सोरठ

(१)

प्रभु मेरे जीवन प्रान , औरन से क्या काम ॥ मेरे...

(२)

दर्शनी हुंडी हरिनाम की, जहाँ सिकराओ खरे दाम। मेरे..

(३)

निराधार के आधार जगत गुरु जिनको नहीं, दूसरो काम।। मेरे..

(४)

'नारायण' के बद्रीनारायण, बेग, बुलाओ निज धाम।। मेरे..

— * —

(५३)

भजन – ठुमरी

जै जै राम कृष्ण हरी।

(१)

कौन भाँति करूँ, स्तुति तेरी।

सुआ पढ़ाते गनिका तरी।। जै जै..

(२)

हरिनाम रूस सबसे मीठा।

जिन पिया वाकी पार पड़ी।। जै जै..

(३)

प्रेम का साबुन, नाम का पानी।

शुद्ध होये मन, विपता हरी।। जै जै..

(४)

फिर ऐसो जनम नहीं बारम्बारा।

'नारायण' कहे मानो, विनती हमारी।। जै जै..

— ✱ —

(५४)

प्रभु के प्रेमी की अवस्था

राग भैरवी

(१)

आशिक के दुख भारी, रोवत बीते उमर सारी। आशिक..

(२)

छिन नहीं चैन, पडत जिया। हृदय लागी प्रेम कटारी।। आशिक..

(३)

आश हरदम यह लागी, कब आवेगी प्रभु की सवारी।

(४)

आत्म सुख तब ही पावें, छवि प्यारे की निहारी।। आशिक.

(५)

'नारायण' ने सीस दिया हैं, जागे सब प्रारब्ध हमारी। आशिक..

— ✻ —

❀ दूसरा-भाग ❀

— ✻ —

❀ गज़लयात ❀

(१)

हरि हॅस के कंठ लगाएंगे , वो दिन कब आएगा ।

पुन्य पाप को मिटाके, निज धाम पायेगा ॥ हरि हस..

(२)

बहुत दिन से बाट देखता, प्रभु कब आएंगे।

दर्शन से ही दयालु के, दुख मेरा जायेगा।।हरी हस..

(३)

क्या निराश रखोगे मुझे, जब तक ये देह हैं।

पार इतना विचार रखना, तेरा दर ही भयेगा।। हरी हस..

(४)

भगवान के दरबार में, मेरी पुकार हैं।

श्री चित्रगुत के सामने, क्या मुख दिखायेगा।। हरी हस..

(५)

कहाँ तक तड़पाओगे मुझे, अपने विरह में तुम।

पर दास रोम रोम से गुन तेरे जाएगा।। हरी हस..

(६)

मेरी तरफ से मुख को, क्यों मोड़ कर बैठे।

अपना दर्द तेरे सिवा, किसको सुनाएगा।। हरी हस..

(७)

रो रो कहे 'नारायण' दिखादो स्वरुप चतुर्भुज।

कलेजा करोगे ठंडा तो, तब ही रिझायेगा।। हरी हस..

— ✻ —

ग़ज़ल

(१)

प्रभु तुम्हारे दर्श का दीवाना बना दो।
रोया करों दिन रात मैं, वो प्रेम बढ़ा दो।। प्रभु..

(२)

सुध बुध रहे ना देह की, आनंद मय रहूँ।
नारायण खड़े हो सामने, ये दान दिला दो।। प्रभु..

(३)

ऐसा नशा पिला दो, उतरें ना एक पल।
बढ़ता रहे हरदम सदा, यह हुकुम सुना दो।। प्रभु..

(४)

इस मन को रंग मजीठ से, रंग दो मेरे भगवान।
छूटे नहीं छुड़ाए से, वो यतन बता दो।। प्रभु..

(५)

कहता हैं दास 'नारायण', मुझे दान प्रेम का दो।
झाँकी तुम्हारी हर समय, खुले नेत्र दिखा दो।।

— ✻ —

ग़ज़ल

(१)

प्रभु तुम्हें बुलाके मैं, हैरान हो गया।

मिलते नहीं हो क्यों मुझे , हैरान हो गया॥ प्रभु तुम्हें..

(२)

तीर्थ व यात्रा करी आज्ञा से तुम्हारी।

साधन भजन ही करके, फिर ज्ञान हो गया॥ प्रभु तुम्हें...

(३)

तार भक्त अनेक हैं, जिसने तुम्हें भजा ।

अपराध क्षमा कीजिये,जो अनजान हो गया॥ प्रभु तुम्हें...

(४)

अविनाशी तेरा रूप, जगत सार में पूरन।

साकार रूप दिखादो अपना , परेशान हो गया॥ प्रभु तुम्हें॥

(५)

'नारायण' तुम्हारी झाँकी से है, वे मान होगा।

छोड़ू द्वेष भाव को, अज्ञान हो गया ॥ प्रभु तुम्हें..

— ✻ —

ग़ज़ल

(१)

प्रभु जुदाई आपकी, अब सही नहीं जाती।

चित्त व्याकुल हो रहा, जगत की गति भाती नहीं।। प्रभु जुदाई..

(२)

रात दिन चिंता यही , कब मिले प्यारे मेरे।

आत्मा होती दुःखित, संतोष को पाती नहीं॥ प्रभु जुदाई..

(३)

कृपा बहुत रखते हो, इस दास पर सदा ।

दुनिया के कार्यों में , वृत्ति तो भरमाती नहीं॥ प्रभु जुदाई..

(४)

'नारायण' हमारे हो चुके, यह दास भी तुम्हारा ।

नींद सुख से दरश बिन, तेरे मुझे आती नहीं॥ प्रभु जुदाई..

— * —

ग़ज़ल

(१)

तड़पते हैं सिसकते हैं, तुम्हीं को याद करते हैं।

हर एक श्वास के संग भगवान, तुम्हीं को याद करते हैं॥तड़पते..

(२)

पिता माता तुम्हीं मेरे, कुटुम्बी और गुरु मेरे।

तुम्हीं सरताज हो मेरे, तुम्हीं को याद करते हैं॥तड़पते..

(३)

नहीं पूछे कोई मुझको, तेरी कृपा बिना जग में।

दासों के नाथ हो तुम्हीं, तुम्हीं को याद करते हैं॥तड़पते..

(४)

नाम को बेचकर तेरे, अन्न से पेट भरता हूँ।

तेरे ही नाम की पूँजी, तुम्हीं को याद करते हैं॥तड़पते..

(५)

हैं छोड़ा गृहस्थ को जबसे, शरण तेरी मैं आया हूँ।

'नारायण' सुख बहुत पाया, तुम्हीं को याद करते हैं॥ तड़पते..

— ✻ —

ग़ज़ल

(१)

चलते, फिरते, खाते, पीते, गुण तेरे ही गायेंगे।

दूसरा जग में नहीं, जिनकी शरण में जायेंगे॥ चलते..

(२)

जिस विधि प्रभु जी राखोगे, आनन्द मानेंगे।

सुख दुःख की कुछ चिन्ता नहीं, जब दोगे तब खाएंगे ॥चलते..

(३)

दो प्रेम ऐसा मुझको, हरदम ही लौ लगे।

नेनों से जल की धारा, निशदिन बहायेंगे॥ चलते..

(४)

पापी, कुटिल, खल, कामी ,में तो सदा रहा।

जो कृपा रही तो आप की, निज धाम पायेंगे॥ चलते..

(५)

निश्चय किया यह मन में, तेरा दर न छोड़ेंगे।

'नारायण' भगवान के हो चुके, तेरे कहाएंगे ॥ चलते..

— ✻ —

ग़ज़ल

(१)

रमते हुए हैं साधु, सुनलो सदा हमारी।

हरदम लगी हमारे, एक प्रेम की कटारी॥ रमते..

(२)

लगते ही प्रेम बान के, आनन्द मय हुआ।

बिगड़ी दशा हमारी, तुमने मेरी सुधारी॥ रमते..

(३)

खान, पान, सोना, नहीं बोलना सुहाता।

कलेजे उठे है पीर, विरह की सदा तुम्हारी ॥ रमते..

(४)

रो रो करूँ पुकार के, सरकार आइये।

हरदम तड़प रही है, यह आत्मा विचारी॥ रमते..

(५)

घर जायेंगे गुरु के, कट जाय शीश भी।

गुण गायेंगे प्रभु के, ले ज्ञान की सितारी॥ रमते..

(६)

अब तो नहीं बनेगी, दर्शन दिये बिना।

'नारायण' तेरी मनमोहनी, सूरत लगे प्यारी॥ रमते..

— ✻ —

(६२)

नाम की महिमा है।

ग़ज़ल

(१)

पी जाऊँ घोट घोट के, मैं नाम तुम्हारा।
पाऊँगा अमर पद को, निज धाम तुम्हारा॥ पी जाऊँ..

(२)

सेवा में रहूँगा सदा, चरणों की तुम्हारे।
दर्शन करूँगा हर समय, प्रभुजी तुम्हारा॥ पी जाऊँ..

(३)

लोटूँगा चरण रज में, आनन्द मय होकर।
पाऊँगा भक्ति आपकी, हो नाम तुम्हारा॥ पी जाऊँ..

(४)

'नारायण' से पापी जीव को, अपनाया है तुमने।
गाऊँगा रोम रोम से, धन्यवाद तुम्हारा॥ पी जाऊँ..

— ✻ —

ग़ज़ल

(१)

मैं तो, नारायण के गुन गाऊँ।

प्रभु से, कुछ और न चाहूँ॥ मैं तो..

(२)

मात पिता, गुरु सरकार मेरे।

जय जय कार, उन्हीं की मनाऊँ॥ मैं तो..

(३)

करुणा के सागर, सबके प्यारे।

भजन साधन से, दिन रात रिझाऊँ॥ मैं तो..

(४)

'नारायण' के, जीवन धन ही हैं ।

जब दोगे, तभी मैं खाऊँ॥ मैं तो..

— ✱ —

ग़ज़ल कुण्डली

(१)

पापों का नाश कैसे, इस पापी का होगा।
साधन नहीं बनता है, माया से तुम्हारी॥

(२)

अब चैन नहीं पड़ता, दर्शन बिना तुम्हारे।
हैं केवल सहारा मुझको, कृपा का तुम्हारी॥

(३)

सिरताज मेरे तुम हो, जीवन आधार भी।
सेवा करूँ दिन रात, गुरु देव तुम्हारी॥

(४)

रो रो पुकार कहता, यह दास 'नारायण'।
कलेजा तो ठंडा करदो, चरण रज से तुम्हारी।।

— ✻ —

ग़ज़ल

(१)

जीवन धन मेरे, चरण नारायण चरण नारायण।

राखूँ हृदय में, चरण नारायण चरण नारायण॥

(२)

खाते पीते सोते जागते।

देखा करूँ मैं, चरण नारायण चरण नारायण॥

(३)

चढ़ाऊँ मस्तक प्रभु चरणों में।

धो धो पीया करूँ, चरण नारायण चरण नारायण॥

(४)

जन्म जन्म से, भटक रहा था।

अब सुख पाया, चरण नारायण चरण नारायण॥

(५)

दास 'नारायण', तालिब हुक्म का।

कभी न छोड़ूँ, चरण नारायण चरण नारायण॥

— * —

(६६)

ग़ज़ल - रागिनी भैरवी

(१)

तेरा नाम हर एक श्वांस से, मेरी निकले।

भुजा चार के दर्श , देना पड़ेगा ॥

(२)

इसी बात को, बस मेरी चाहना है।

मेरा पार बेड़ा लगाना पड़ेगा ॥

(३)

लाडला बेटा, मैं हूँ तुम्हारा ।

गोदी में मुझको, बिठाना पड़ेगा॥

(४)

जो सरकार ने मुझको, अपना लिया है।

तो चरणों में अपने, बुलाना पड़ेगा॥

(५)

लाज दासों की प्रभु , रखनी पड़ेगी ।

मुझे दर्श जल्दी , दिखाना पड़ेगा॥

(६)

करूं लोक चौदह, न्योछावर मैं तुम पर।

चरण के ही दर्शन, निभाना पड़ेगा॥

शरीर रखना नहीं चाहता था, लेकिन जब "नारायण" ने उमर बढ़ा दी तब यह पद लिख कर प्रार्थना की!

— ✻ —

ग़ज़ल

(१)

मुद्दत से तड़पते है, हम याद में तुम्हारी ।
रोते ही रोते छूटेगी, क्या देह हमारी॥ मुद्दत से..

(२)

अब सहन नहीं होता , यह दुख विरह का।
निराश नहीं होऊंगा कभी, कृपा से तुम्हारी॥ मुद्दत से..

(३)

भक्तों का दुख आपसे , देखा नहीं जाता।
इस दास पर नजर, क्यों टेढ़ी है तुम्हारी॥ मुद्दत से..

(४)

नारायण तो भेंट कर चुका, यह देह भी तुमको।
हर आखों से कबूल है, जो मरजी हैं तुम्हारी॥ मुद्दत से..

इस पद का उत्तर प्यारे नारायण ने यह दिया कि अखंड तप करने के लिये उमर बढ़ा दो, हिमालय में जाकर करो

— ✻ —

गुरुदेव की स्तुति

ग़ज़ल कव्वाली

(१)

गुरुदेव दया करके मुझ पे,
मेरा गृहस्थ का बंधन छुड़ाय दिया।
गुरु बिन कोई दया नहीं करता,
मेरा आवागमन दुःख मिटाय दिया॥

(२)

रोम रोम से करूँ गुरु स्तुति मैं,
जिसने रोरव नरक से बचाय दिया॥
शरण अपनी में लीन्हा पाप मिटे,
फिर गुन दयालुता का दरसाय दिया॥

(३)

भक्ति माता का मान बढ़ाते रहें,
नीति अनीति जताते रहे।
उपदेश सबको करावें भजन का,
वैष्णव धर्म बताय दिया॥

— * —

(४)

दास समझ अपना दर्शन देवें।
पल पल छिन छिन पीछे ही रहें।
हर दम बुरे कर्म से बचाते रहें,
धर्म सद गुरु का वे निभाय दिया॥

(५)

गुरु अविनाशी जबसे मुझको मिले,
प्रारब्ध मेरे तब उदय हुए।
त्यागी बनाकर लीला दिखादी ,
माया से बचना सिखाय दिया॥

(६)

कलियुग में साधन गुरु यह बताया,
भजन सार है और सत्य बोलना।
'नारायण' कैसे स्तुति करे पर ब्रह्म की,
मुझ से पापी को तुमने निभाय दिया॥

— ✻ —

गजल

(१)

दर्शन जरा दिखाजा , बद्री विशाल प्यारे।

हृदय को शांत करजा , बद्री विशाल प्यारे॥

(२)

कब तक मिलोगे प्यारे, यह तो कहो सही।

मन की अगिन बुझाओं , बद्री विशाल प्यारे॥

(३)

भक्ति प्रेम है नहीं, मन तो कठोर है।

तुम ही दया करोगे, बद्री विशाल प्यारे॥

(४)

कृपा से आप ही की , चलता है यह शरीर।

मुझको नहीं बिसारो , बद्री विशाल प्यारे॥

(५)

सेवा गुरु चरण की, हैं मुख्य धर्म मेरा।

पूरन करो यह आशा, बद्री विशाल प्यारे॥

(६)

दासों का दास आपका , कहता है 'नारायण'।

निराश कभी न करना, बद्री विशाल प्यारे॥

— * —

गजल

भजन

(१)

प्रभु तुम्हारी याद में, मन को लगायेंगे।

लहु को हृदय के चरणों में, तेरे बहाएंगे ॥ प्रभु..

(२)

दर्शन बिना तुम्हारे, रोवेंगे हम दिन रात।

विरह की अग्नि से मन को, अपने जलायेंगे॥ प्रभु..

(३)

जो तुम नहीं मिलोगे, कैसे जीयेंगे हम।

फिर शीश काट चरणों में, तेरे चढ़ायेंगे॥ प्रभु..

(४)

तेरी दयालुता पर, आशा लगाये बैठे।

प्रभु छवि मन मोहनी, कब तक दिखायेंगे॥ प्रभु..

(५)

बिनती यह ही 'नारायण' वो दिन कब आएगा ।

भगवन पंचायतन सहित, जल्दी से आयेंगे॥ प्रभु..

— ✻ —

गजल

(१)

दिखादो अपना दर्श नारायण, विरह में तेरे तड़प रहे हैं ।
वो बांकी झाँकी बतादो प्यारे, यह नैन मेरे तरस रहे॥

(२)

कैसे जीवन कटे हमारा, है चिन्ता हरदम यही मुझे अब।
मिलेंगे कब तक मेरे नारायण, यह प्राण मेरे भटक रहे हैं॥

(३)

गदा, पदम , शंख, चक्र धारे, मुकुट पीताम्बर हैं पहिने प्रभु।
मुस्कान उनकी लुभावे मन को, वो श्याम सुन्दर खटक रहे हैं॥

(४)

गले में हीरों की माला पहिने, कानन कुण्डल झलक रहे हैं।
हाथों में पोंची कड़े विराजे, वो नेत्र उनके झलक रहे हैं॥

(५)

चरन श्याम तिरछी चितवन, चमक हैं बिजली सी सारे अंग में ।
छवि देख यह मगन हुआ अब, दास 'नारायण' भटक रहे हैं॥

— ✻ —

गजल

(१)

किसी प्रकार दे हमें, दर्शन श्री बद्रीश।
मनो कामना पूरन करें, प्यारे श्री बद्रीश॥

(२)

मन मानता नहीं मेरा, अब हाय क्या करें।
तुमको कसम है प्रेम की, प्यारे श्री बद्रीश॥

(३)

कैसे सुनाऊँ हाल दिल, कहते नहीं बनता।
तेरा प्रेम कंठ रोकता, प्यारे श्री बद्रीश॥

(४)

मेरी टेर है तुम हि तलक , मानो चाहे न मानो।
मरजी हो जो सरकार की, प्यारे श्री बद्रीश॥

(५)

जो कुछ करोगे आप ही, इस दास के लिये।
'नारायण' गुरु परब्रह्म है, प्यारे श्री बद्रीश॥

— ✻ —

गजल

(१)

दिला दो भीख दर्शन की तेरे दर का भिखारी है।
मुझे देना पड़े भिक्षा ये ही नीति तुम्हारी है॥ दिला दो ..

[२]

अनीति जो करोगे तुम, हँसेगे लोग दुनिया के।
मेरा तो कुछ नहीं बिगड़े , न जाय लाज हमारी है॥ दिला दो ..

[३]

तरसती रैन दिन अँखियाँ , तेरे दर्शन बिना भगवन।
बहे जल धारा नेत्रों से यही मन में बिचारि है॥ दिला दो..

[४]

सुनी है टेर भगतों की सदा तुमने हरि अपने।
पड़ी बिपता है जब उनपर, तभी तुमने सवारी है॥ दिला दो..

[५]

कहे यह दास 'नारायण' तुम ही हो सर्व शक्तिमान।
जो मानो नेक सी अर्जि, मेरा जीवन सुधारि है॥ दिला दो..

— ✻ —

ग़ज़ल

(१)

श्री प्रभु दयाल कब हमें, दर्शन दिखायेंगे।

क्या यों ही उम्र भर हमें, प्यारे तड़पायेंगे॥ श्री प्रभु...

(२)

राखोगे जिस गति से रहूँगा उसी तरह।

जो हुकुम हो हुज़ूर का, सर पर चढ़ायेंगे॥ श्री प्रभु...

(३)

पुकारेंगे रात दिन तुम्हें, कब तक नहीं सुनोगे।

जो हाय से ज़रूर ही, तुमको रुलायेंगे ॥ श्री प्रभु...

(४)

भगवान तुम्हारी दयालुता, देखी है हम बहुत।

इतनी ही टेक और हैं , आप ही निभायेंगे॥ श्री प्रभु...

(५)

मुख मोड़ करके बैठे, मेरी तरफ से क्यों।

घायल कलेजा हो रहा, किसको दिखायेंगे॥ श्री प्रभु...

(६)

जब तक नहीं मिलोगे, रोऊँ खड़े होकर।

इस देह के लहु को, पानी बनायेंगे॥ श्री प्रभु...

(७)

'नारायण' पंचायतन सहित जिस दिन पधारेंगे।

'नारायण' दास तप पूरे करे , खुशियाँ मनायेंगे॥ श्री प्रभु...

— ✻ —

ग़ज़ल तर्ज कव्वाली

गाने की तर्ज –

(भोले शंभु कैलाश बुलालो मुझे)

(१)

प्यारे विष्णु वैकुंठ बुलालो मुझे।
अपना दासों का दास, बनालो मुझे॥ प्यारे विष्णु...

(२)

सेवा को मन भटकता , तुम्हारी बहुत हैं।
जैसे बने अब, निभालो मुझे॥ प्यारे विष्णु...

(३)

वासना मोक्ष कि रखता नहीं मन में।
अपनी तिरछी, चितवन को दिखादो मुझे॥ प्यारे विष्णु...

(४)

इन्द्रलोक के पदार्थ, मैं चाहता नहीं।
हरि रूप चतुर्भुज, दिखादो मुझे॥ प्यारे विष्णु...

(५)

'नारायण' तुम्हें देखा करें , सेवा चरण करें ।
हुकुम यही अब, सुना दो मुझे॥ प्यारे विष्णु...

— * —

ग़ज़ल

(१)

गुरु के चरण की रज का सुरमा बना लिया।
लगाने से नेत्रों में, सम दर्शी बना दिया॥ गुरु के...

(२)

गुरु के सिवाय दूसरा कुछ दीखता नहीं।
सबको ही गुरु मान कर, हम दंडवत किया॥ गुरु के...

(३)

मुझको निहाल कर दिया, जबसे मिले गुरु।
जो जो भलाई की है, मेरा जानता हिया ॥ गुरु के...

(४)

जिसके गुरु भगवान हैं, सब कुछ उसे मिला।
आनन्द चौदह लोक का निश्चय ये ही जिया ॥ गुरु के...

(५)

गुरुजी अजर अमर हैं, अविनाशी परंब्रह्म।
'नारायण' के सर के ताज हैं, प्यारे मेरे पिता॥ गुरु के...

— * —

ग़ज़ल

(१)

निश्चय किया है यह ही , गुरु के नगर को जाऊँ।
पूरन करेंगे आशा तो, चरणों की रज को पाऊँ॥ निश्चय..

(२)

घर है गुरु महाराज का, खाड़े की धार पर।
बिरला ही कोई पहुँचता, किस जुगती से मैं पाऊँ॥ निश्चय..

(३)

बनी है सड़क प्रेम की, विश्वास के कंकर ।
छिड़काव हरिनाम का, यह सोच मन में लाऊँ॥ निश्चय..

(४)

झण्डा लहराय सत्य का, छाया हैं धर्म की।
पवन है आधीनता की, क्या क्या तुम्हें सुनाऊँ॥ निश्चय..

(५)

नदियाँ बहे हैं दान की, शुभ कर्म के फूल हैं ।
आती सुगंध निर्मोह की, सबको बुला संुघाऊं ॥ निश्चय..

(६)

सुन सुन के हाल पंथ का, घबराय है जिया।
'नारायण' गुरु कृपा करें, किस भाँति से रिझाऊँ॥ निश्चय..

— ✻ —

ग़ज़ल

(१)

हुए बदनाम तुम से, दिल लगाकर।

न पाया दर्श तेरा, दिल भराकर॥ हुए बदनाम...

(२)

तड़पते ही रहे, तेरी जुदाई से।

करोगे क्या, हमारा दिल जलाकर॥ हुए बदनाम…

(३)

हुए आशिक तुम्हारे रूप के हम।

पड़ेगा चैन कैसे, दिल दुखाकर॥ हुए बदनाम…

[४]

तुम्हारे प्रेम की रीति, अनौखी है।

रिझाते मन, झलक अपनी दिखाकर॥ हुए बदनाम...

[५]

किये हैं काज , भक्तों के बहुत से।

समझकर दास की बिनती दयाकर॥ हुए बदनाम...

[६]

देखकर दोष को मेरे, न डरना ।

निर्विकारी नाम तेरा, तुम निभाकर॥ हुए बदनाम...

[७]

भिखारी दर्श चरनन का तुम्हारे।

'नारायण', बिता रहा है, वृथा उमर गँवाकर॥ हुए बदनाम...

— ✻ —

ग़ज़ल

(१)

नारायण हमारी नैया, पार अब लगादो।

किनारे पर आ चुकी है, थोड़ी सी निभादो॥ नारायण..

(२)

नीति गुरु की तुमने बरती, सदा कुमार्ग से बचाया।

गुन गाऊँ रोम रोम से, दर्शन मुझे दिखादो॥ नारायण..

(३)

दुआरे, खड़ा तुम्हारे कब का पुकारता।

हृदय से अपना साँचा , प्रेमी मुझे बनादो॥ नारायण..

[४]

रो रो के हिचकियों से, विनती करूँ यही।

अलौकिक मुस्कान आपकी, प्यारे ज़रा बता दो॥ नारायण..

[५]

तेरे सिवाय कौन मेरे दर्द को जाने।

'नारायण' व्याकुल हो रहा, संकट से बचा दो॥ नारायण..

— ✻ —

श्री सद्गुरुदेव से प्रार्थना

ग़ज़ल

(१)

प्रभु तुम्हारी याद में रोते रहेंगे हम।
दर्शन अगर न दोगे, तो कैसे जीएंगे हम॥ प्रभु

(२)

तुमको तो मेरी, कुछ भी परवाह नहीं है।
जुदाई का दर्द आपका, कैसे सहेंगे हम॥ प्रभु ..

(३)

आंसू की झड़ी लग रही दिन रात आँख से।
क्या हृदय से कभी आपके, प्यार बनेंगे हम॥ प्रभु..

(४)

कहो तक समझाये मन को यह दास 'नारायण'।
सच्ची लगन छूटती नहीं, अनुभव कहेंगे हम॥ प्रभु..

— ✻ —

ग़ज़ल

(१)

लगन जो हरी से , लगा चुके हैं।

वे मोक्ष जीवन को , पा चुके हैं॥ लगन जो..

(२)

ज्ञान भक्ति, फैला के जग में।

जो हस्ती अपनी , मिटा चुके हैं॥ लगन जो..

(३)

भक्त बने सब , चरण प्रभु के।

मिला जो उनको , लुटा चुके हैं॥ लगन जो..

(४)

धन्यवाद दूँ, उन ऋषि मुनि को।

'नारायण' को मन में रमा चुके हैं ॥ लगन जो..

— ✻ —

ग़ज़ल

(१)

प्यारे तुम्हारे प्रेम में, भीजें रहेंगे हम।

प्रेमी तुम्हारे हृदय के, कैसे बनेंगे हम॥ प्यारे..

(२)

कब तक हमें तड़पाओगे, अपने बिरह में तुम।

अब बिरह कठोर आपका , कैसे सहेंगे हम॥ प्यारे..

(३)

सनातन का नाम आपका सुनते हैं दयालु।

दासों पे दया छोड़ दी कैसे सुनेंगे हम॥ प्रभु तुम्हारी..

[४]

'नारायण' ने आसरा लिया, चरणों का तुम्हारे।

भक्ति बिना सरकार की , कैसे छकेंगे हम॥ प्रभु तुम्हारी..

— ✻ —

मनीराम जी से प्रार्थना

ग़ज़ल

(१)

सारा जगत है झूठा, भजन ही को सत जानो।

भगवान मिलें कलियुग में, यही सार निश्चय मानो॥ भजन..

[२]

झूठेँ जगत से पार होने को, साधन भजन समझो।

कहता हूँ अपना अनुभव, यह मन में खूब ठानो॥भजन..

[३]

भजन ही से पाप नाश, हुआ करते हैं सदा।

होते खुशी भगवान हैं, इसी में मनको तानो ॥भजन..

[४]

'नारायण', दास की तो श्रद्धा, केवल भजन पर है।

मन को समझा समझाके, हरदम इसे थामो ॥

— दोहा —

मेरे प्रान से प्यारे, बद्री विशाल।

अपने दर्शन से करदो निहाल॥

— ✻ —

गजल

[१]

गुरु जी हमारे प्राण हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं।

नेत्रों में बस रहे हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं॥

[२]

गुरु जी मेरे बद्रीश हैं, बिराजे हैं बद्रीक आश्रम ।

चतुर्भुज रूप उनका है, इसमें कोई सन्देह नहीं॥

[३]

गुरु जी अजर अमर हैं, व सर्व शक्तिमान।

चराचर में व्याप्त हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं॥

[४]

यह देह गुरु को अर्पण पहले ही कर चुके।

प्रभु ने भी अपना लिया, इसमें कोई सन्देह नहीं॥

(५)

आशा यह ही लगी है, कब तक मिलें 'नारायण'।

दर्शन तो दयालु देंगे ही, इसमें कोई सन्देह नहीं॥

— ✱ —

गजल

(१)

लेना सुध मेरी ; ओ चक्र सुदर्शन वाले।

निहाल दर्शन से करो, ओ चक्र सुदर्शन वाले॥

[२]

भक्ति से हीन हूँ, और न प्रेम है।

केवल सहारा तेरा है, ओ चक्र सुदर्शन वाले॥

[३]

धारा बहे प्रेम की, वर माँगता यही।

हर रोम से तुमको भजूँ, ओ चक्र सुदर्शन वाले॥

[४]

मन तो बहुत नीच है, चिन्ता यह ही मुझे ।

दयालु भगवन दया करो, ओ चक्र सुदर्शन वाले॥

[५]

कृपा करो प्रभु मेरे, निज दास समझकर ।

'नारायण' चरण न छोडेंगे , ओ चक्र सुदर्शन वाले॥

— ✻ —

गजल

[१]

श्री बद्री विशाल प्यारे, अब तो दर्श दिखाजा ।

प्याला बस एक प्रेम का, प्रभु मुझें पिलाजा ॥

[२]

तड़पते रहें दिन रैन, दर्श बिन तेरे हरि।

चरणों की रज से अपने, बिरह की अगिन बुझाजा ॥

[३]

भोगों में इन्द्रियों के, रहता है मन सदा।

माया के कार्यों से, वृत्ति मेरी हटाजा ॥

(४)

पिछले जन्म के पापों से पीड़ित हुआ हूँ मैं।

भटकता हूँ योनियों में, यह दुःख मेरा मिटाजा ॥

(५)

मन की गति है नीच, कैसे मिले 'नारायण'।

यह रोग दुखदाई बहुत, जल्दी मुझे बचाजा ॥

— ✻ —

गजल

(१)

प्याला विश्वास प्रेम का, प्रभु जो मुझे पिलादो ।

मार्ग सरल यही है, इस पर मुझे चलादो ॥

(२)

निज धाम भक्ति माता, विश्वास प्रेम है।

सनातन धर्म की नीति, सबको यही सुनादो ॥

(३)

तेरे भजन को आलसी , रहता है मन सदा।

वृथा समय गँवाता हूँ, इन रोग को हटादो ॥

(४)

तुमसा कोई दाता नहीं, इन चौदह लोक में।

श्रद्धा चरण कमल में, निष्काम अब बढ़ादो ॥

(५)

अधिकारी अपने दर्शन का, जल्दी मुझे बनादो ।

'नारायण' तड़प रहा है, इस दुःख को मिटादो ॥

— ✻ —

नारायण से मन की जिज्ञासा करना

गजल

[१]

कैसे मिलें प्रभु तुम्हेँ , मन मानता नहीं॥

समझाता हूँ बहुत कुछ , मन मानता नहीं॥

[२]

तेरे दर्श को आत्मा रोती हैं दिन रात ।

अत्यन्त ढीठ हो गया, मन मानता नहीं॥

[३]

लेते ही नाम आपका, भागे पवन समान ।

लाता हूँ पकड़ के , मन मानता नहीं॥

[४]

लोगों से बात करने में , पाता आनन्द है।

कहता हूँ हरि नाम भज , मन मानता नहीं॥

[५]

यह नीच गति मन , दुखदाई बहुत है।

तुम्हीं बचाओ कष्ट से , मन मानता नहीं॥

— ✻ —

(६)

उत्तम पदार्थ खाने के , मन माँगता सदा।

जिभ्या चटोरी कर दी हैं, मन मानता नहीं॥

[७]

उठती हैं वासनायें, इस मन में सेकड़ों ।

'नारायण' दो शांति इसे, मन मानता नहीं॥

— ✻ —

भगवत नाम की महिमा

ग़ज़ल

[१]

ईश्वर तेरे ही नाम कि बूटी बनाएंगे ।
पी पी के मस्त हो के , गुन तेरे गाएंगे ॥ ईश्वर तेरे...

[२]

महिमा तुम्हारे नाम की तुमसे भी अधिक है।
रटते जो तेरे नाम को, , वे मोक्ष पायेंगे॥ ईश्वर तेरे ...

[३]

जप से तुम्हारे नाम के , होते हैं पाप नाश ।
साधन ये हि सरल है, सबको बताएँगे ॥ ईश्वर तेरे ...

[४]

भजन से तुम्हारे नाम के , कुछ दुख नहीं होता ।
तेरा नाम दुख हरण है, नरक से बचाएंगे ॥ ईश्वर से...

[५]

लेने से तेरे नाम के , तरे हैं भक्त अनेक ।
हरिनाम जो न लेयेंगे, , मूरख कहाएंगे ॥ ईश्वर से...

[६]

सब ओढ़ना बिछोना, तेरे ही नाम का।
तकिया भी तेरे नाम का हरदम लगायेंगे॥ ईश्वर से...

(७)

निश्चय ही तेरे नाम पर , पाया हैं सुख अपार।
"नारायण" किया जो अनुभव , उसी को सुनाएंगे ॥

— ✻ —

गजल

(१)

पास जिनके राम धन है, कुछ कमी उनको नहीं।
अष्ट सिद्दी लोटती पैरों में , कुछ कमी उनको नहीं॥

(२)

राजा रईस आते हैं, करने उन्हें सलाम।
कुछ नहीं लेते किसी से, कुछ कमी उनको नहीं॥

(३)

महाराज के महाराज हैं, चिंता नहीं मन में कोई।
श्री कृष्ण जिनके साथ है, कुछ कमी उनकों नहीं॥

(४)

करते नित सादा भोजन, सन्तोष ही करते सदा।
वासना भोगों की त्यागी, कुछ कमी उनको नहीं॥

(५)

जागीर में चौदह लोक , उनको दिये भगवान ने।
हर जगह आनंद पाते , कुछ कमी उनको नहीं॥

(६)

माया गृहस्थ छोड़कर, साधु हुए जबसे।
हरि नाम को लुटा दिया, कुछ कमी उनकों नहीं॥

(७)

राम धन बढ़ता रहे, बिनती यही कर जोड़ है।
'नारायण' चरण सेवा करें, कुछ कमी उनको नहीं॥

— ✻ —

गजल

(१)

हे प्रभु आनंद दाता , दास की सुधी लीजिये ।

मलिन मन पापी कुटिल , अब शुद्ध इसको कीजिये॥ हे प्रभु..

(२)

नाम लेने को तेरा, मन हो गया है आलसी ।

ध्यान तुझमे ही लगे , अब बुद्धि ऐसी दीजिये ॥ हे प्रभु..

(३)

अनीति कलयुग भगवान की , दुख देती है बहुत।

पापी अनेक तारें , मेरी तरफ भी रीझिये ॥ हे प्रभु

(४)

मैं तो सदा ही स्वार्थी, निस्वार्थी तुम हो ।

सरताज हो मेरे तुम ही, चरणों को तेरे छूजिये ॥ हे प्रभु..

(५)

नहीं ठौर कोई दूसरा , जिसे जा सुनाऊं ।

अर्जी यही 'नारायण' बस प्रेम रस को पीजिये॥ हे प्रभु..

— ✻ —

गजल

(१)

मैं तो तेरा दास प्रभु , मुझको भुलाया कैसे।

अपने चरनो से मेरे , मन को हटाया कैसे॥ मैं तो…॥

(२)

अपने भक्तों की सदा करते हो रक्षा तुम ही।

टेर द्रौपदी की सुनी , चीर बढ़ाया कैसे॥ मैं तो..

(३)

यह देह तुमको सौंपकर, बेची तुम्हारे हाथ।

अपना निज दास समझ, प्रेम घटाया कैसे॥ मैं तो..

(४)

अवगुन को गुनकर मानते, यह रीति है तेरी।

पाप कर्मों ने फिर, सेवक को सताया कैसे॥ मैं तो..

(५)

जब तक न हो कृपा तेरी, नहीं पूछता कोई।

'नारायण' पतित पावन कहे, यह शब्द सुनाया कैसे..

— ✻ —

ग़ज़ल

(१)

प्रभु की नौकरी में, हम सुख अपार पाया।

पदार्थ सभी हैं पाये, जो मन हमारे भाया॥ प्रभु..

(२)

जो मान हमने पाया, राजा नहीं पाते।

यह देह जिससे देखा, बस प्रेम ही जनाया ॥ प्रभु..

(३)

हैं तुच्छ चौदह लोक सब, तेरी कृपा के सामने।

वह मुक्त पागया है, शरण में हरि की आया॥ प्रभु..

(४)

जिस घर में भक्ति ईश्वर, होती नहीं सदा।

जीवन को अपने खोते हैं, कुल को लजाया॥ प्रभु की...

(५)

कहाँ तक कहूँ प्यारे, तेरे नाम की बड़ाई।

'नारायण' को तेरे रूप ने, है बहुत ही लुभाया ॥ प्रभु की..

— ✻ —

गजल

(१)

अविनाशी के दर पै, मेरी यही पुकार है।

हॅस के चरण लगालो, यह ही विचार है॥ अविनाशी..

(२)

तुम मुझे देखा करो, और मैं तुम्हें देखा करूँ।

डोरी लगी हो प्रेम की, तब ही बहार है॥ अविनाशी..

(३)

सत्य धर्म पर तुम्हारे चलता रहूँ सदा ही।

बुरे कर्म से बचाओ तो, मेरी जगार है॥ अविनाशी..

(४)

सुमरन तुम्हारे नाम का, हर योनि में करूँ।

भक्ति अटल हो अपनी, मेरा श्रृंगार है॥ अविनाशी..

(५)

मेरी बाँह गहे की लाज, अब रखना पड़े प्रभु।

'नारायण' यह दास आपका, मूरख गँवार है॥ अविनाशी..

— ✻ —

दादरा

(१)

अब तो प्रभु निभाये बनैगी।

निभाये बनैगी, बनाये बनैगी॥ अब तो...

(२)

छोड़कर के तुमको जाऊँ कहाँ मैं।

तुम न मिलोगे, तो दुनियाँ हँसेगी॥ अब तो...

(३)

भीलनी के बेर सुदामा के तंदुल ।

वैसी ही कृपा , अब करनी पड़ेगी॥ अब तो…

(४)

योग्य नहीं मैं, तेरे मिलन का ।

तुम्हारी दया ही , मुझे पार करेंगी ॥ अब तो...

— ✻ —

(५)

इच्छा बड़ी और जीवन है थोड़ा।

तुम्हीं रखोगे तो लाज रहेगी ॥ अब तो...

(६)

बहुत दिवस से तेरी बाट निहारूँ।

दर्शन बिना मेरे कुल की लजेगी ॥ अब तो...

(७)

हस के चरन छुआओ दास से ।

चिंता 'नारायण' तब ही मिटेगी॥ अब तो..

— ✻ —

सेवा करने को प्रार्थना

[१]

प्रभु दयालु दया करके,

अपने चरणों का दास बनालो मुझे ।

नहीं चाहता मोक्ष मन से,

अपने दर्शन का लाभ दिलादो मुझे ॥

[२]

जो तुम मालिक तो मैं सेवक,

गुरु हो मेरे तो शिष्य हूँ मैं।

जो माता पिता तो मैं लाडला बेटा,

अपनी गोद में प्रभु जी बिठालो मुझे ॥

[३]

पोशाक धारक जो तुम करोगे,

तो श्रृंगार फूलों का मैं ही करूँ।

समय आरती का जब हो तुम्हारी,

अपने मंदिर का पुजारी बनालो मुझे ॥

[४]

हीरे मोती की माला से श्रृंगार होगा,

— ✻ —

सजाऊँ सब अंगों को मैं भाव से।
भोजन करो तो मैं पकवान लाऊँ,
अरुचि हो तो जो जी सुनादो मुझे ॥

[५]

दरबार में विराजोगे जो,
तो सेवा चोबदारी बनकर करूँ मैं।
देवताओं को संग लाकर दर्शन कराऊँ,
वह दरबार शाही दिखादो मुझे ॥

[६]

सिंहासन ऊपर विराजोगे तुम,
मैं नीचे खड़ा होकर चँवर डुलाऊं ।
जब शयन करो तब चरण दबाऊँ,
अपने दर की दरबानी सिखा दो मुझे ॥

[७]

सत्य भाव लेकर मैं सेवा करूँ।
रिझाऊँगा प्यारे को सेवा से निशदिन ।
'नारायण' चरण में रहे प्रेम से,
यह इच्छा है पूरण निभादो मुझे ॥

— ✻ —

गजल

[१]

छिपे रहोगे कहाँ तलक तुम, पता तुम्हारा लगा ही लेंगे।
अगर है यह प्रेम मेरा सच्चा, तो प्यारे तुमको बुला ही लेंगे॥

[२]

तड़प तड़प के बहा के आँसू , पुकारूँ तुमको हिमालय बन के ।
जो आह में मेरी कुछ असर हैं तो , दिल तुम्हारा रिझा ही लेंगे॥

(३)

विरह से बेचैन हो रहा हूँ, दया तो लाओ दयालु भगवन ।
हैं भक्त प्रिय तुम्हें पुकारे , हम भक्ति अपनी निभा ही लेंगे॥

(४)

समा रहे हो हृदय में मेरे, निकल के जाओगे कैसे प्रभु अब ।
बिरह की अग्नि लगी हुई को , दास 'नारायण' बुझा ही लेंगे॥

— ✻ —

गजल

(१)

दिल जानी सुनो मेरे, दिल की कहानी कहूँगी ।

चाहे मानो न मानो, बिन कहे न रहूंगी ॥ दिल जानी..

(२)

प्रेम के बान मेरे, हृदय में लागे ।

बिरह की अगिन में कब तक सहूँगी॥ दिल जानी..

(३)

साँवरी सूरत ने मेरे मन को लुभाया।

चैन नहीं बिन दर्श , प्रभु कैसे जीऊँगी॥ दिल जानी..

(४)

हाय मुस्कान हरी, मेरा जिया तड़पावे ।

प्रेम सुधरास , प्यारे कैसे पीऊँगी॥ दिल जानी..

(५)

दास ‘नारायण’ कहे बात हृदय की।

कौन यतन किया, अब मैं करूंगी ॥ दिल जानी..

— ✻ —

(१)

'नारायण' प्रेम बिना मिलते नहीं, चाहे कर लो कोटि उपाय।
मन वश करने के लिये, उत्तम साधन ये ही बताय ॥

(२)

जो खान पान में रहे, रसना बस नहीं होये।
'नारायण' प्रेम छुए नहीं सुपने , जीवन वृथा ही खोये ॥

(३)

रसना बैरी प्रेम की राखो उसे मरोड़ ।
बिना प्रेम मिलते नहीं, 'नारायण' जुगल किशोर॥

(४)

सेवा से पैसा मिले, नहीं मिले भगवान।
'नारायण' भजन और ध्यान से पावे पद निर्वान ॥

———

— ✻ —

(१)

साहब सब का एक है, साहब का कोई एक।

'नारायण' हजारों में तो है नहीं, लाखों में कोई एक॥

(२)

सत्य धर्म का मूल है, छोड़ो उसे न भूल ।

आगामी पाप न होंगे, 'नारायण' ये ही त्रिशूल ॥

(३)

सदा विजय हो सत्य की, चिन्ता हो सब दूर।

मान बड़ाई पाओगे, 'नारायण' पड़े असत पै धुल ॥

(४)

सदा सुखी मोनी रहे, भजन करे दिन रात।

साधु को यह साधना, 'नारायण' सुख पावे इस भाँति ॥

(५)

वृथा भाषण को त्याग दो, यह अनुभव मेरा मान।

बचो पाप के बोझ से'नारायण' भजन मन ठान ॥

— * —

(१)

सत बोलना और भजन करे, मनुष्य धर्म यह जान।

लोक परलोक दोनों बने, 'नारायण' कहा जो मान॥

(२)

जन्म लिया संसार में, हरि भजन को आये।

'नारायण' को नहीं भूलियो, जन्म जन्म सुख पाये॥

(३)

एकान्तवास का सुख भला, मिलना अधिक दुख देत ।

'नारायण' बिन काज कही न जाइये, झगडे मोल क्यों लेत ॥

(४)

तू अवगुन अपने देख नित, दुनियाँ के नहीं देख।

'नारायण' चलन अपना ठीक रख, ये ही सनातन लेख॥

(५)

बिना भजन भगवान के जीवन, जग में पशु समान।

हरि बिन तेरा कौन है, निश्चय मन में मान॥

— ✻ —

(१०२)

(१)

कारज तो संसार के सब, गये अधूरे छोड़।
जन्म मरन दुख से बचो, मोह बन्धन को तोड़॥

(२)

तजौरे मन झूठे जगत की आशा।
सदा राखो प्रभु चरणों में वासा॥

(३)

फ़कीरों से न पूछो , है कहाँ मुकाम उनका।
जहाँ आसन बिछा बैठे, वहाँ जानो मुकाम उनका॥

(४)

चौदह लोक का मोल है, प्यार प्रभु का नाम।
'नारायण' कभी न विसरिये, भजन करो निष्काम॥

(५)

हरि भजन ध्यान में मन नहीं, माया के मज़दूर।
'नारायण' कहे क्या जानते , साहब का घर दूर॥

— ✻ —

(१)

भोजन भजन जब कीजिये, मौन रखो नित नेम।

'नारायण' कहे सुख पाओगे, मानो वचन यह प्रेम॥

(२)

भजन करन को आलसी , खान पान दिन रैन।

'नारायण' जन्म जन्म पछिताओगे , याद रखो यह बेन ॥

(३)

अधिक बोलना छोड़ दो , महा पाप का मूल।

'नारायण' से बेमुख करे , हाथ लिये त्रिशूल॥

(४)

भजन बिना जीवन वृथा , कर्म धर्म यह मान ।

'नारायण' मन खान पान में, मानो पशु समान ॥

(५)

काली समय अति कठिन, रहना सदा होशियार।

'नारायण' को याद रखो, शुभ कर्म विचार॥

— * —

(१०४)

अनन्य भक्तों की आखिरी अवस्था

(१)

मन मगन हुआ फिर क्या बोले ।

पूरा हुआ फिर क्या तोले ॥ मन मगन..

(२)

वासना जग की, सबहीं त्यागी।

छूटा बन्धन कर्म, मुख क्या खोले॥ मन मगन..

(३)

लीन रहे मन, भजन ध्यान में।

नित प्रेम हरि चरणन में जोड़े॥ मन मगन..

(४)

साथ रहें हर समय प्रभु जी।

बीज श्रद्धा का हृदय में बोले ॥ मन मगन..

(५)

कहे 'नारायण' माया मोह से बचना।

रहे जीवन मुक्त, पृथ्वी पर डोले॥ मन मगन..

!!! इति !!!

— ✻ —